श्रीजिनेन्द्रस्नपनादिसंग्रहः

प्रणेता—

सूरिचक्रचक्रवर्ति-शासनसम्राट्

तपोगच्छाधिपति-भट्टारक

श्रीविजयनेमिसूरिः

विनेय—

मुनि-अमृतविजयः

तपोगच्छाधिपति-शासनसम्राट्-आचार्यमहाराजाधिराज-



श्रीमद्-विजयनेमिसूरीश्वरजी.

PHŒNIX P WORKS

॥श्रीः॥

॥ ॐ अर्हं नमः ॥

सकलस्वपरशास्त्रनिष्णातभारतभूमिभास्कर तपोगच्छा-
धिराज सूरिगणसार्वभौमशासनसम्राट्तीर्थोद्धारक
आचार्य श्रीविजयनेमिसूरीश्वर-
चरणकमलचञ्चरीकविनेयाणु
मुनि-अमृतविजयजि-
त्प्रणीतः-

॥श्रीजिनस्तवनादिसंग्रहः॥

श्री 'जैनएडवोकेट' प्री प्रेसमां शा: चिमनलाल
गोकलदासे छाप्यो, घीकांटावाडी अमदावाद.

वीर सं, २४४९ विक्रम सं १९७९

आवृत्ति १ ली अमूल्यम् प्रत १०००

॥ भक्तिनी भेट ॥

(छन्द मन्दाक्रान्ता)

ज्हेने देखी बहु श्रुतधरो, पूर्वना सांभरे छे
ज्हेना प्रत्ये निखिल जनता[1], मान मोटुं धरे छे

कापे छे जे कुमत[2] तरुना, कन्दने मूळमांथी
आपे छे जे भवजल तरी[3], देशना मोक्षमाथी

ज्हेणे दीक्षा भगवती म्हने, आपीने साथ लीधो
म्होटा यत्ने सुखकर म्हने, मूर्खने बोध दीधो

जेओ नित्ये मुज हिततणो, मार्ग खन्ते कहे छे
ते श्रीनेमिसूरि चरणमां, "भक्तिनी भेट आ छे"

---

१ जन समुदाय २ दुष्टमतरूपी वृक्षोना ३ नाव

ॐ

सकलस्वपरसमयपारावारपारीणेभ्यः सकलसूरिसार्वभौमेभ्यः
श्रीविजयनेमिसूरिभगवद्भ्यो नमो नमः ॥

॥ श्रीजिनस्तवनचतुर्विंशिका ॥

मंगलाचरण (मन्दाक्रान्ता)

देवेन्द्रोनां मुकुटमणिनी कान्तिथी मिश्र थाये,
कान्ति जेना चरण नखनी विस्तरी ऊर्ध्व जाये;
जाणे दीवी भववन थकी मोक्षनो मार्ग कहेवा,
ते श्री आपो शुभ मति मने थंभणाधीश देवा १

॥ श्री ऋषभदेवस्य संस्कृतं स्तवनम् ॥

(विमलाचल नितु वन्दिए–ए राग)

वन्देहं विश्वेश्वरं, वरचन्दनकल्पं
कल्पलताधिक कामदं, मदभेदकजल्पम् –वन्देहं० १
जल्पवितण्डावर्जितं, जितमारविकारं
कारुण्योध्धृतविष्टपं, तपसामाधारम् –वन्देहं० २
धारं धारं यं हृदि, हृदयंगममूर्तिं
मूर्तिमद्धर्माश्रयः, श्रयते निजस्फूर्तिम् –वन्देहं० ३
स्फूर्तिवित्रोटितबन्धनं, धनधान्यविमुक्तं
मुक्तावलिवद्भासुरं, सुरसेवनयुक्तम् –वन्देहं० ४
युक्तियुक्तामृतवचं, वचनातीतबोधं
बोधिबीजाविष्कृतिं, कृतकर्मनिरोधम् –वन्देहं ५

(शार्दूलविक्रीडित छन्द)

श्रीशत्रुञ्जयतीर्थराजतिलक, श्रीमारुदेवप्रभो ।
कल्याणास्पदमङ्गलैकनिलय, प्रौढप्रभावाकर ॥
स्तुत्वैवं तवभक्तिरागवशतः, याचे प्रबद्धांजलिः ।
नित्यं बोधिगुणं शिशुर्मुनिपतेः, श्रीनेमिसूरेरहम्॥१॥

॥ श्री ऋषभदेवप्रभुनुं स्तवन ॥

(शासन नायक शिवसुखदायक जिनपति-ए राग)

श्रीमंन्नाभेय देव नमुं नित्य नेहथी म्हारालाल
अनुपम अनुत्तर धर्म प्रकट थयो जेहथी म्हारालाल
भविहितकर सर्वार्थने त्यागी जे प्रभु म्हारालाल
चविया दक्षिणभरते सुसेव्य एहिज विभु म्हारालाल १

जाणी जन्म सुरेन्द्र सुरोथी परिवर्या म्हारालाल
जइ सुरशैल सुस्नात्र करे भक्ति भर्या म्हारालाल
अन्वर्थी अन्वर्थ करे निज नामने म्हारालाल
भूले सुमनस केम विवेकना ठामने म्हारालाल २

त्यागी राज्य साम्राज्य चारित्रनुं स्थापीने म्हारालाल
लइने चोथु नाग कर्मने कापीने म्हारालाल
वर्जित द्वन्द्व जिनेन्द्र समाधिथी फरे म्हारालाल
महितल मांहे ध्यान एकाग्रपणे करे म्हारालाल ३

---

१ श्रीमद् नाभेय केवळज्ञानरूपीलक्ष्मीवाळा एवा नाभिराजाना पुत्र २ जेहनाथी बीजु कंइ मोटु नथी तेवा ३ पांचमुं अनुत्तर विमान ४ मेरु पर्वत ५ नामप्रमाणे गुणवाळा ६ देव पंडित ७ जोडलु (रागद्वेष).

उभयावरणीय मोह तथा अन्तरायने म्हारालाल
हणी लइ दंसण नाण चडीने सिंहासने म्हारालाल
देशना दइ जिनराज तार्या बहु भव्यने म्हारालाल
निर्यामक उपमान न छाजे अन्यने म्हारालाल ४

वेदनीय नाम गोत्र आयुनो क्षय करी म्हारालाल
सिद्धशिला शणगार तें मुक्तिवधू वरी म्हारालाल
जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति विषे जे वर्णव्यां म्हारालाल
पञ्चकल्याणकसार ते श्रवणे सांभळ्यां म्हारालाल ५

सांभळी सन्तोष थाय परन्तु दृष्टिथी म्हारालाल
द्यो दर्शन मुज देव कृपारस वृष्टिथी म्हारालाल
ए विनति जो ऋषभजिनेश्वर चित्त धरे म्हारालाल
नेमिसूरीश्वरदास अमृत पद तो वरे म्हारालाल ६

---

१ ज्ञानावरणीय अने दर्शनावरणीय २ खलासी (भव-समुद्रनो पार पमाडनार)

॥ श्री अजितनाथप्रभुनुं स्तवन ॥

(पुख्खलवइ विजये जयोरे— ए राग)

पूरण पुण्ये पामीओरे, पूर्ण निरंजन देव
भक्ति सुधारस जामीओ रे, केम करी छोडुं सेव
जिणन्दराय जगमां तुंज अजित, में दीठी अन्यनी
रीत जिणन्दराय० ॥१॥
गुण रत्नाकर[1] तें प्रभु रे, जीत्यां आठे कर्म
तेणे ब्रह्मादिक देवना रे, खोल्या आंतर मर्म[2] ॥जि०॥२
पञ्चमुखी ब्रह्मा बन्या रे, देखवा अप्सर रूप
शंकर स्त्रीने वश थइ रे, नाटक करत अनूप ॥जि०॥ ३
लक्ष्मी सह विष्णु रहे रे, मोहवशे गुलतान
केइक शस्त्रो लेइ फरे रे, केइक धरता ध्यान ॥जि०॥ ४
रूप चरित्रथी जाणीए रे, दोष सहित ए देव
शुद्धि करवा आत्मनी रे, कोण करे तस सेव ॥जि०॥ ५
अजित अजितता[3] दीजीए रे, कीजीए आप समान
शिष्यअमृत नेमिसूरिनो रे, नित्य धरे तुज ध्यान॥जि०॥

---

१ समुद्र २ रहस्य ३ मोहादि शत्रुओ न जीती शके तेवी शक्ति

॥ श्री संभवनाथ प्रभुनुं स्तवन ॥

(श्री श्रेयांसजिन अन्तरजामी—ए राग)

संभव जिनवर भवभयभंजन, रंजन तुं भविजननो रे
नामाक्षरमां नाथ निरंजन, सार ग्रहीने जगनो रे
॥ संभव० ॥ १ ॥

सम्यक् तत्वतणो तुं वक्ता, भंक्ता[1] जड चेतननो रे
सम्यक्[2]त्रिकने आपी प्रेमे, सम्यक् त्राता[3] भविनो रे
॥ संभव० ॥ २ ॥

भग शब्दकेरा द्वादश[4] अर्थो, ऐश्वर्यादिक[5] धरतो रे
भक्तजनोना हृदयसरोमां[6], हंस रीति आचरतो रे
॥ संभव० ॥ ३ ॥

वर्णादिक[7] विषयोने जीती, वर[8] तुं देव सकलमां रे
शिव वहु[9] वर[10] वर दीजे मुजने, शक्ति अनन्ती तु-
जमां रे ॥ संभव ॥ ४ ॥

गर्भित[11] गुण नामी तुं जीनजी, हुं गर्भित गुणकामी रे
अमृत आश धरे छे एवी, नेमिसूरीने पामी रे
॥ संभव० ॥ ५ ॥

---

१ विभाग करनार २ रत्नत्रयी (ज्ञान, दर्शन अने चारित्र) ३ रक्षण करनार ४ बार १ प्रभुता ज्ञान वि० (कल्पसूत्र टीकामां बतावेलां) ६ सरोवर ७ रूप, रस, गन्ध अने स्पर्श ८ श्रेष्ठ १ पति १० वरदान ११ अन्तर्गत

॥ श्री अभिनंदनप्रभुनुं स्तवन ॥

(सुमतिनाथ गुणशुं मलीजी—ए राग)

अभिनन्दन गुण पुष्पमांजी, मुज मनमधुकर[1] लीन[2]
प्रेमे रस आस्वादतोजी, कदिय न थाये खिन्न[3] ॥
सोभागी साहिब नहि छोडुं तुज संग ॥ १ ॥
मंजरी[4] जेम कोकिलनेजी, सायरने जेम चन्द्र
तेम हमारा नयननेजी, ताहरुं बिंब जिनेन्द्र
॥ सोभागी० ॥ २ ॥
पद्म[5] सूर्यनी सारिखोजी, धरीए प्रभुपर प्रेम
छोडयो जेह छुटे नहिजी, हीर[6]नी ग्रंथी[7] जेम ॥
॥ सोभागी० ॥ ३ ॥
प्रेम विना भक्ति नहिजी, भक्ति विना नहि मुक्ति
मुक्ति विना सुख स्वप्न छे जी, जाणो एहिज युक्ति
॥ सोभागी० ॥ ४ ॥
पुण्योदयथी पामीएजी, सेव्य सेवकनी जोड
शिष्यअमृत नेमिसूरिनोजी, कहे छे बे कर जोड
॥ सोभागी० ॥ ५ ॥

---

१ भ्रमर २ आसक्त ३ उदासीन ४ आंबाना मोहर ५ कमळ ६ रेशम ७ गांठ

॥ श्री सुमतिनाथप्रभुनुं स्तवन ॥

(सोलमा श्री जिनराज ओलग सुणो अमतणी–ए राग)

सुमतिनाथ सुहंकर[1] छो त्रिभुवनपति, रूप अनूप[2]
निहाली हार्यो रतिपति[3]
गुण गण गावा समर्थ न थाए गीर्पति[4], तो पछी
अल्प विषयमति म्हारी शी गति ॥ १ ॥
तोपण बोलुं नाथ हुं भक्तिने वशे, करो निश्चय
जिनराज के म्हारु हित थशे
धारक केवलज्ञान दर्शन चारित्रनो, कारक धर्म
प्रवाहरूपी तुं तीर्थनो ॥ २ ॥
व्यापक[5] एक समयमां लोकालोकनो, प्रापक[6] आत्मीय
रिद्धि[7] तथा सिद्धितणो
शक्ति अनन्ती नाथ निरागता धारतो, भक्तिवश
थइ तोपण भव्यने तारतो ॥ ३ ॥

---

१ सुखकर २ उपमा रहित ३ कामदेव ४ बृहस्पति ५ एकसमय जेटलां टुंक वखतमां लोक तेमज अलोकना सघळा भावोनो जाणनार तथा देखनार ६ पमाडनार ७ पोतानी ज्ञानादि गुणो रूप लक्ष्मी

११६१२.

पण्डितवर्गे द्वेष रहित तुं वर्णव्यो, खण्डित कर्मरिपुने
तापण तें कर्यो
योगी हृदयकमलमां नित्ये तुं रहे, रागी थाय निरोग
जो तुज शरणुं ग्रहे ॥ ४ ॥
जय पामो जिनराज तमे जगती तले, लय पामो मन
भक्ति विषे मुक्ति मले
मुक्तिदायक मागणी मुज मुक्तितणी, सूक्ति
नेमिसूरीना शिष्य अमृततणी ॥ सुमतिनाथ० ॥ ५ ॥

॥ श्री पद्मप्रभुनु स्तवन ॥

(संवत एक अठलन्तरे रे, जावडशानो उद्धार--ए राग)

पद्मप्रभु जिनराजजी रे, तुंही त्रिलोकी भूप
सुरपति नरपति भावथी रे, सेवा करत अनूप ॥
॥ हो प्रभुजी ॥—
म्हेर नजर जरी कीजीए, ल्हेर मुक्तिनी दीजीए रे
लीजीये मुजरो मुज....... ॥ १ ॥

---

८ कर्मशत्रु ९ सारुवचन

हुं पण पामी सेव्यने रे, करुं सेवा नित्यमेव
तुं पण सेवक सेवनी रे, कदर करे जिन देव ॥
॥ हो प्रभुजी ॥ २ ॥

सुरमणि सुरघट सुरतरु रे, दीए वांछित दान
तो पण तेने नव घटे रे, दायकतानुं मान ॥
॥ हो प्रभुजी० ॥ ३ ॥

लौकिकें ए लौकिक दे रे, तुंही अलौकिक सार
आम्रफलो क्यांथी दीए रे, केरंडनो संभारे ॥
॥ हो प्रभुजी० ॥ ४ ॥

दायक कहीए तेहने रे, जे दीए अक्षयदान
मन वच काया थिर करी रे, धरीए तेहनुं ध्यान ॥
॥ हो० प्रभुजी०॥ ५ ॥

दायकताने तुं वर्यो रे, लायकता हुं नाथ
विजयनेमिसूरीशना रे, अमृतने द्यो हाथ ॥
॥ हो प्रभुजी० ॥ ६ ॥

---

१ चिन्तामणि २ कामकुंभ ३ कल्पवृक्ष ४ सांसारिक ५
५. केरंडानु वृक्ष ६ जुथ

॥ श्री सुपार्श्वनाथप्रभुनुं स्तवन ॥

(दीठो हो प्रभु दीठो जगगुरु तुज-ए राग)

सम हो प्रभु सप्तम देव सुपार्श्व सुमति हो हो प्रभु
सुमति धरीने वन्दीएजी ॥ १ ॥
र्शन हो प्रभु दर्शन पूरव पुण्य, उदये हो प्रभु
उदये पाम्यो ताहरुंजी
द्धि हो प्रभु आप समाणी रिद्धि, सिद्धि हो प्रभु
सिद्धि प्रभावने दीजीएजी २ ॥
ज्ञान हो प्रभु विज्ञानघन जे भव्य, कुसुमे हो
प्रभु कुसुमे नित्य पूजा करेजी
न्दन हो प्रभु चन्दनवनमां मयूर, कीर्ति हो प्रभु
कीर्ति जे तुज उच्चरेजी ॥ ३ ॥
ान हो प्रभु निधान गुणनो तेह, पद्म हो प्रभु
मुज हृदय पद्म रमेजी
ुणगण हो प्रभु गुणगण गाता देव, अमृत हो प्रभु
अमृत रसथी सिंचताजी ॥ ४ ॥

---

१ सातमा २ सद्‌बुध्धि ३ आत्मा ४ मोर ५ भंडार

भक्ति हो प्रभु भक्ति करे नित्य नाथ, नन्दन हो प्रभु
नन्दनवनना[६] वासीओजी
लावण्य हो प्रभु लावण्य तपनुं तुज, दुस्सह हो प्रभु
दुस्सह द्वेषी वर्गमांजी ॥ ५ ॥

विजय हो प्रभु विजय परपर तुज, वृद्धि होप्रभु
वृद्धि पामे विश्वमांजी
नेमि हो प्रभु नेमिसूरीश्वर शिष्य, अमृत हो प्रभु
अमृत एणीपरे वदेजी ॥ ६ ॥

॥ श्री चन्द्रप्रभुनुं स्तवन ॥

(शीतल जिनपति ललित त्रिभंगी—ए राग)

चन्द्रप्रभु जिन चंदन चर्चित[१], अर्चित[२] सुरनर इन्दे रे
विरचित स्तोत्रे स्तवित[३] सुभक्ते सिद्धसेनादि
कवीन्दे रे ॥ चन्द्रप्रभ० ॥ १ ॥

---

६ मेरुपर्वत उपर आवेलु देवताओने रमवानुं उद्यान
१-२ पूजित ३ स्तुति करायेला

मता निष्परिग्रहता वली, आँदि अनादित्व धारी रे
ता अष्ठमता ने शूरता, निष्क्रूरता धर नामी रे
॥ चन्द्रप्रभ० ॥ २ ॥

तृता स्थिरता सक्रियता, निष्क्रियता कर्तृता रे
गता योगिता भोगिता, आनन्द उदासीनता रे
॥ चप्रन्द्रभ० ॥ ३ ॥

। अनेक विरुद्ध स्वभावी, धर्मचन्द्र जिन तारा रे
पे अद्भूतता पण्डितने, कापे द्वन्द्व हमारा रे
॥ चन्द्रप्रभ० ॥ ४ ॥

---

४ मुक्तिनी अपेक्षाये सादि अने आत्मानी
क्षाये अनादि ५ मुख्यपणुं ६ आठमा जिन
। ७ कर्म शत्रुओ प्रत्ये शूरवीरपणु ८ दयालुत्व ९ मोक्ष
रे जवापणुं १० स्वस्वभावमां रहेवा पणुं ११ ज्ञानादिमां
णता १२ गमनादि क्रिया रहितपणुं १३ तीर्थादिकनुं क-
गुं १४ हेतुपणुं (भव्य जीवने मोक्ष प्राप्तिमां) १५ मन
न कायाना योग सहीतपणुं (तेरमा गुणठाणानी अपेक्षाये)
आत्मीय गुणोनु भोक्तापणुं १७ निज गुणोमां रमणता
सांसारिक वस्तुओ तरफ राग द्वेष रहित पणुं१९ जोडलु.
जोडलुं (राग द्वेष).

वैर तजे जाति वैरी पग, द्रष्टिमात्रथी स्वामी रे
केम विरोध तजे न विरोधी, स्यात्पद भूषण पामी रे
|| चन्द्रप्रभ० || ५ ||

सप्त नयो सप्त भंग वदी तैं, सघलुं सुन्दर कीधुं रे
नेमिसूरीश्वर शिष्य अमृतनुं, एहथी कार्यजसिध्युं रे
|| चन्द्रप्रभ० || ६ ||

|| श्री सुविधिनाथप्रभुनुं स्तवन ||

(अन्तरजामी सुण अलवेश्वर–ए राग)

सुविधिजिणन्दा परमाणन्दा, परमपदस्थितप्यारा
स्नेहकरावी मुजने स्वामी, केम रहो छो न्यारा,
प्रभुजी छो करुणा भण्डार मुज भवदुःखवेल्ली[1] कापो,
कापो कापोने महाराज मुजने मोक्ष[2] पंथे थापो || १ ||
प्रेमनिधान प्रियंकर[3] प्रभुजी, पुण्योदयथी पाम्यो,
मेघमयूरसम[4] जिनजि म्हारो, प्रेम तुंज शुं जाम्यो||२||

---

१ संसार दुख रूप वेलडी २ मार्ग ३ हितकर ४ मेघद अने मोरनी माफक ५ दृष्टि

अमीदृष्टि तहारी मुज उपर; शासन मुजपर तहारु;
प्रेमे सेवा करतां जाणुं, भाग्य खील्युं हवे महारू.
॥ प्रभुजी० ॥ ३ ॥

पण जिनराज पीडे छे अन्तर; सातराजनु मोटुं
प्रेमीथी दूरे रहेवुं ते; कोने न लागे खोटुं.
॥ प्रभुजी० ॥ ४ ॥

शक्ति अनन्ती नाथ धरो तो; भेद भंग झट कीजे
नेमिसूरिना शिष्य अमृतनो; यश तो थोडो लीजे.
॥ प्रभुजी० ॥ ५ ॥

॥ श्री शीतलजिन स्तवन ॥

[क्युं जानु क्युं बनि आवहि–ए राग]

शीतलजिनपति सेविये, शीतल जेहनी छांयहो मित्त[1],
भवदावानलदग्धने[2][3], सुरतरुसम[4] जिनराय हो मित्त,
॥ शीतल० ॥ १ ॥

---

६ आणा ७ सात राजलोक तिच्छलोक अने सिद्धशिला वच्चेनु अन्तर]

१ मित्र, २ संसाररूपी मोटो अग्नि, ३ बळेलो, ४ कल्पवृक्ष.

ग्रीष्म ऋतुना तापथी, तप्त मयूर तृषित हो मित्त,
शीतल जल सहकारने, इच्छे ज्युं निजचित्त हो मित्त,
॥ शीतल० ॥ २ ॥

युं इच्छे जिन सेवने; जे हलुकर्मी होय हो मित्त,
गुरुकर्मीना चित्तमां, दारा दोलत दोय हो मित्त.
॥ शीतल० ॥ ३ ॥

सेवा करे कोइ शेठनी, कोइ सेवे महाराय हो मित्त,
तडको वाढ सहे घणुं, देश विदेशे जाय हो मित्त,
॥ शीतल० ॥ ४

तो पण दुःख नवि टळे, न मळे अविचल सुख हो मित्त
बावळ जइ जे याचतो, किम भांजे तस भुख हो मित्त,
॥ शीतल० ॥ ५ ॥

सेव्यो सुरतरु कंदछे, दशमो देव जगीश हो मित्त,
सेवा 'सुधारस' युं भणे, नेमिसूरीश्वरशिष्य हो मित्त.
॥ शीतल० ॥ ६ ॥

---

५ तपेलो ६ आंबानुं झाड, ७ भारेकर्मी ८ स्त्री ९ वैभव १० अमृतरस,

॥ श्री श्रेयांसजिन स्तवन ॥

(विमलाचल नितु वन्दीये-ए राग)

श्री श्रेयांस जिणन्दनी, मूर्ति मनोहारी,
समतारसने झीलती, जाणे अमृत क्यारी. ॥श्री०॥१॥

निर्विकारनयणभरी, पद्मासनवाळो,
समचतुरस्र संस्थानथी, भामंडळधारी, ॥ श्री० ॥२॥

उत्संगे नहि अंगना, हाथे नहि माळा,
शस्त्रो के सर्पो नहि, कोइ मोहना चाळा ॥ श्री० ॥३॥

चारणमुनिओए स्तवी, सेवी सुरइन्द्रे
अद्वितीय मोक्षांग ए, मानी पण्डित वृन्दे ॥ श्री० ॥४॥

पुण्ये पाम्यो छुं प्रभो, सेवीश सदाइ
नेमिसूरीश्वर शिष्यने, अमृतपद दाइ ॥ श्री० ॥५॥

---

१ कोइपणजातनांविकाररहित, २ स्त्री ३ हथीआर ४ जंघाचारण अने विद्याचारणमुनिओ ५ सरखामणी रहित ६ मोक्षनु कारण ७ समूह ८ मोक्ष

॥ श्री वासुपूज्य जिन स्तवन ॥

(माता मरुदेवीनां नन्द—ए राग)

म्हारे मनमन्दिरीए राज, आवो वासुपूज्य जिणंदा,
दया करीनेजी, जिनजी दया करीनेजी, प्रभुजी दया
करीनेजी, आवो वासुपूज्य जिणंदा दया करीनेजी,
ए चाल.

मनमन्दिरमां क्रोधमानादिक, सर्पो मोटां रहे छे,
आप गरुडनी दृष्टि पडतां, ने होतां नहोतां छे, म० १
मन मन्दिरमां समकित दीवो, प्रकटयोछे महाराज,
मोक्षेच्छा[1] सिंहासन शोभे, नाथ निरंजन काज, म०, २
भक्तिभाव केसरनी प्याली, चन्दन शम[2] संवेग[3],
बार भावना धूप घटा छे, मंज्जन[4] जळ सुविवेक, म० ३
यथाशक्ति आज्ञानुं पालन, ए कुसुमोनी माला,
धर्मध्यान शुभ चामर लइने, करशुं नाच रसाला, म०४
इणविध पूजासामग्रीथी, भावभक्तिने करशुं
नेमिसूरिनो सेवक बोले, युं[5] अमृतपद वरशुं म० ५

---

१ मोक्षनी इच्छा २ शांति ३ वैराग्य ४ न्हवण ५ आवीरीते

॥ श्री विमलनाथ प्रभुनुं स्तवन ॥

मुनिसुव्रतजिन वन्दतां अतिउलसित तन मन थाय हो-प्राग
विमलजिनेश्वर भेटतां, मुज भक्तिरस उल्लसाय रे
भक्ति रसमां स्नानथी, आत्मा निर्मळ मुज थायरे,
आत्मा निर्मळ मुज थाय, विमलजिन भेटतां सुखथायरे
सुख थाय ने भवदुःख जाय, विमलजिन भेटतां
सुख थायरे ॥ १ ॥

द्रव्यजले नहातां थकां, क्षण देहनी शुद्धि थायरे,
आत्मनो मेल नवि टळे, ए तो द्रव्यशुद्धि कहेवाय रे;
ए तो द्रव्य शुद्धि कहेवाय विमलजिन भेटतां
सुख थायरे ॥ २ ॥

आत्मअसंख्यप्रदेशमां, कर्मवर्गणामेल भराय रे,
क्षण क्षण सातके आठनो, बन्धे लोहानलनेन्यायरे
॥ बन्ध० ॥ ३ ॥

ज्ञानादिक गुण माहरा, प्रभु सर्वे ते अंवरायरे,

---

१ उभराय, २-३ सात (आयु वर्जित) अथवा आठ कर्मप्रकृति ४ लोढु अने अग्नि परस्पर मले छे तेवीरीते
५ ढंकाइ जाय

स्फटिक मणि ज्युं धूलथी, पथ्थररूपे पलटाय रे
॥ पत्थर० ॥ ४ ॥

शुद्धि सर्व गइ वळी, परभाव रमणता थाय रे,
परभावे रमतां मल्यो, तुं उपकारी जिनरायरे
॥ तुं उप० ॥ ५ ॥

तुज भक्ते निर्मळ थयां, के भव्य वळी कै थायरे,
नेमिसूरीश्वर शिष्यने, तुज भक्ति अमृतपद दाय रे
॥ तुज० ॥ ६ ॥

॥ श्री अनन्तजिन स्तवन. ॥

(भव त्रीजे वरस्थानक तप करी—ए राग)

ज्ञान अनन्तुं [१]चरण अनन्तुं, दर्शन वीर्य अनन्त,
नाम अनन्त वली लोकान्ते, स्थिति पण सादिअनन्त
जिगन्दा जन्म मरण दुःख कापो, आप पदे मने थापो,
॥ जिगन्दा जन्म० ॥ १ ॥

---

१ चारित्र,

चउदशमुं गुणठाण जे फरस्यो, चउदशमो जिणराय,
चउदशमुं सोपान ते लेवा, हुं सेवुं तुम पाय, जिणन्दा,२
श्येन समो पक्षी पण प्रभु तुज, आश्रयथी पूजाये,
शिवसुख साधे भक्तो एमां, अचरज शुं एने थाये
॥ जिणन्दा० ॥ ३ ॥
ज्ञान विना ज्युं दिशि दिशि भटके, कस्तुरीमृग वनमां
तुज समकित विण युं हुं भटक्यो, चार गतिना रणमां
॥ जिणन्दा० ॥ ४ ॥
पंचमगति दायक जिन नायक, पामीने जगदीश,
अमृतपद लेवा इच्छे छे, नेमिसूरीश्वर शिष्य,
॥ जिणन्दा० ॥ ५ ॥

॥ श्री धर्मनाथ स्तवन, ॥

(शान्ति जिनेश्वर केशर अर्चित जगधणी-ए राग)

बुधजन सेवितशासन धर्म जिनेश्वरु,
विश्वोद्धार धुरंधर ज्ञानदिणेसरु;

२ पगथीउ ३ बाजपक्षी (अनन्तनाथप्रभुनु लांछन) ४ मोक्ष
१केवलज्ञाने करीने सूर्य समान

दोषरहित तुज धर्म विषे मुज मति ठरी,
तुज साखे भगवन्त प्रतिज्ञा में करी.
उगे पश्चिम भाण पूरवमां आथमे,
सौधमेन्द्र कदाच असुरोने नमे,
अग्नि शीतल थाय सुमेरु पण चले,
चक्रवर्तीनी रिद्धि पण आवी मले,
गंगा सिन्धु प्रवाह, पश्चिम पूरव चले.
विंपत्तिनी वादळीओ वरसे भले,
ध्रुवतारो निजस्थान तजीने संचरे,
कोइ कुदेव उपाय सहस्र भले करे,
तोपण सुखकर धर्म तजु नहिं ताहरो,
अंन्तिम अविचल निश्चय ए छे माहरो,
तजी चिंतामणि रत्न ग्रहे कोण काचने,
कोण ग्रही पाषाण तजे सुखनावने, ४
जन्मांतर पण स्वामी शरणुं ताहरुं
मेळववा इच्छे छे मनडुं माहरुं;
ए अमृत पद मन्त्र प्रभु मुज मन वस्यो,
गुरुवर नेमिसूरीश्वरथी ते उल्लस्यो ५,

२ दुःख ३ हजार ४ छेल्लो ५ दृढ,

॥ श्री शान्तिनाथस्य संस्कृतं स्तवनं ॥

(आदि जिनं वन्दे गुणसदनं इत्यनेन रागेण गीयते)

शान्तिजिनं वन्दे शमदमदं, मदनविनाशनदक्षं रे
दक्षैः देवगणैः श्रिततीर्थं, तीर्थिकजनकृतरक्षं रे,
॥शान्ति०॥ १ ॥

रक्षोभिर्विषयैरविकारं, कारकषट्कविमुक्तं रे,
मुक्तिवधूवक्षःस्थलहारं, हारावलिसमसूक्तम् रे,
॥शान्ति०॥ २ ॥

सूक्तैः सुरगुरुरचितैः स्तुत्यं, स्तुत्यचारित्राधारं रे
धाराधरघोषं गतदोषं, दोषाकरवक्तारं रे,
॥शान्ति०॥ ३

तारणतरणालौकिकनावं, नावं नावं नाथं रे;
नाथेऽहं शरणं हतपापं, पापमलाहरपाथं रे ॥शान्ति०॥

पाथोधरगम्भीरमुदारं, दारितभवरिपुवारं रे,
वारं वारं विश्वोद्धारं धारय चेतसि स्फारं रे,
॥ शान्ति०॥ ५ ॥

(शार्दूलविक्रिडीत)

श्रीमत्पञ्चमचक्रिणं जिनपतिं श्रेयस्करं भक्तितः,
स्तुत्वा त्वां कृतशान्तिशांतिसदनं श्रीविश्वसेनाङ्गजम।
याचे नो विपुलं सुराज्यमथवा देवेन्द्रमानादिकं,
किन्तु त्वत्पदसेवनामृतरसं. नेमेरहं नित्यशः ॥ १ ॥

॥ श्री शान्तिजिन स्तवन ॥

(प्रथम जिनेश्वर प्रणमीए––ए राग)

शान्तिजिनेश्वर माहरो. इह भव परभव देव;
शान्तिरसेथीभरीयोदरीयो जिनपति, नित्यकरुंतुजसेव १
गुंणगण तुज आश्रय लहे, जस नहिं आश्रय कोय;
जे दोषोने देवो पण संग्रह करे; चिन्ता तस केमहोय, २
हिंसकप्राणी जन्मनां; शत्रु सिंह प्रमुख,
ते पण शान्त बनीने शत्रुता तजे, देखी प्रभु तुज मुख, ३

१ गुणोना समुदायने तमारा जेवो बीजो कोइ आश्रयदाता नहिं मळवाथी ते तमारोज आश्रयलेछे, पण दोषोने तो आश्रयदातानी चिंता कयांथी होय, केमके तेमनो ब्रह्मा विष्णु इत्यादि देवो पण प्रेमथी संग्रह करे छे

मारुं मनजळ मोहथी मलिन नहिं शिवयोग्य;
कतके तुज ध्याने जो निर्मलता धरे,तो थाये शिवयोग्य४
षट् खण्डो नवनिधि तथा, तजीने चौद रत्न,
त्रिभुवननाथकताने पाम्या छो प्रभु अचरीज आप
प्रयत्न,५
पारेवाने परभवे, आप्युं सर्व शरीर,
हस्तालम्बन आपो तो पण मेळवुं आत्मरिद्धि थइ धीर६
भवअटवी सथ्थवाह छो; करुणासागर ईश;
अमृतपदनी आश धरेछे तुज थकी, नेमिसूरीश्वर शिष्य७

श्री कुंथुनाथप्रभुनुं स्तवन.

(प्रभुजी सुखकर समकित दीजे–ए राग.)

जिनजी मुजपर महेर करीने, सुखकर शुभ मति
दीजे रे;
दीन दयाळ ए देवा शक्ति, आप विना नहिं बीजेरे.
जिनजी० १

---

२ मेलुं ३ सार्थवाह,

काळ अनादिथी हुं सुखनी, आशाए आशाए रे;
भीषण भव अटवीमां भटकुं, मृगतृष्णाने न्याये रे.
जिनजी० २

नवि पामुं यदि पामुं तो पण बहु दुःखोथी भरीयुं रे;
मधलीपी असिधारा जेवुं, तेमां चित्त न ठरीयुं रे.
जिनजी० ३

दुष्ट मतिथी शब्दादिकमां, रागभरी ललचायो रे.
सन्मतिदायक जिनजी तुज विण, भ्रांतिथी भरमायोरे
जिनजी० ४

पहेली राततणो भुलेलो, सूर्योदय जेम स्वामी रे
भाग्योदयथी भ्रांतिभेदक, सत्तरमो जिन पामीरे.
जिनजी० ५

दृढतर मिथ्याज्ञानाबाधित, शुभ संस्कारी मनने रे;
अमृतसम करवा इच्छा छे, नेमिसूरिपद रजने रे
जिनजी० ६

---

१ भयंकर २ झांझवानाजळमां जळबुद्धिथी हरिण दोडे छे तेम.
३ तरवार; ४ असत्यज्ञानथी पराभव न पामे तेवुं; ६ अमृतरसजेवुं.

श्री अरनाथप्रभुनुं स्तवन.

(भरतनी पाटे भूपतिरे सिध्धि वर्या इणे ठाम सलूणा)

श्री अरजिनप्रभु ताहरे रे, दर्शनथी आनंद जिणंदा,
आत्म असंख्यप्रदेशमां रे, थाय मुनीन्द्र अमंन्द
जिणन्दा. १

तुज समकित मुज शृखलारे, गुणगण खेंचण काज
जिणन्दा;
मोक्षनगरनी दूतिकारे, पूण्ये पाम्यो आज जिणन्दा. २

पुंज पुरातन पापनारे, नाशक नव्य समीर जिणन्दा,
श्याम थयेला चित्तनेरे, धोवा गंगा नीर जिणन्दा. ३

संसारार्णव तारवारे. दृढतर नौका एह जिणन्दा,
दग्ध हृदयने ठारवारे, पुष्करावर्तनो मेह जिणन्दा. ४

अमृतपद दायक प्रभुरे, मागुं भव भव सेव जिणन्दा,
नेमिसूरिना शिष्यनेरे, चित्ते तुंहीज देव जिणन्दा. ५
श्रीअरजिन प्रभु ताहरे रे.

---

१ अतिशय, २ सांकळ ३ रस्तो देखाडनारो स्त्री, ४ जूनां ६ वायु ६ संसाररूपी समुद्र, ७ नाव ८ क्रोधादिकथी बळेल.

॥ श्री मल्लिनाथप्रभुनु स्तवन. ॥

(संवन एक अठलन्तरे रे जावडशानो उद्धार–ए राग)

पृथ्वीतळ पावन करेरे, मल्लिजिनेश्वर राय,
मोटो महिमा एहनोरे, मुखथी कही न शकाय;
हो भविया, मल्लिजिनेश्वर वन्दियेरे,
पाप पुराणा फन्दियेरे, करीये सफळो जन्म. १

केवलज्ञानप्रकाशथी रे, सर्व दिशा उद्योत,
चउमुख प्रभुजी आपतारे, भविने अद्भूत बोध,
हो भविया० २

योजन मान भूमि विषेरे, समवसरणमां समाय,
करोडो नर तिरि देवतारे, बाधा जरीये न थाय;
हो भविया० ३

एक वचन पण नाथनुरे, स्व स्वं वचन समजाय,
देव नरादिक सर्वनेरे, अंभोधरजलन्यायहो भविया०४

---

१ नाशकरीए, २ ज्ञान ३ पे।तपोतानी भाषामां ४ मेघनुं एकज आतनुं पाणी जेम आश्रय विशेषथी भिन्नभिन्न परिणाम पामेछे तेम

नाथ विहारनां वायुथीरे योजन सवासो मांय.
पूर्वोत्पन्न रोगो सवि रे जाय नवा नवी थाय;
हो भविया० ८
कर्मक्षयोत्थ अतिशयो रे. नीरखे आनन्द थाय.
अमृत आश धरे घणी रे नेमिसूरि सुपसाय
हो भविया० ६

॥ श्रीमुनिसुव्रत प्रभुनु स्तवन. ॥

(जगजीवन जगवालहो मरुदेवीनो नन्द लालरे)

मुनिसुव्रत जिन ताहरुं, दर्शन मुज सुखरूप लालरे,
संसारे मरुधर विषे. पाम्यो परब अनूप लालरे;
मुनिसुव्रतजिन वन्दीये. १
सफळ थया मुज नेत्र आ, तुज दर्शनथी देव लालरे,
धन्य घणुं मुज आत्मने, करतो भक्ते सेव लालरे;
मुनि० २
गुण गण गातो जिभने, शुद्ध क ' हुं आजलालरे,
भवजळधि तरवा प्रभु, तुज आणा मुज जहाज
लालरे मुनि० ३

५ पहेलानां थयेलां, ७ कर्मक्षयथी थयेलां,
१ निर्जळ प्रदेश, २ उपमां रहित.

दुस्तर भीम[3] भवोदधि, नदीसम थाशे नाथ लालरे,
आपतणी शुभ दृष्टिथी, पुण्योदयनी साथ लालरे;
मुनि० ४.

दुःषम काल भलो घणु, ज्यां तुज दर्शन होय लाल,
तुच्छ गणु छुं अन्यने, जो तुज दर्शन न्होय लालरे;
मुनि० ५.

अ[4]विचळसुखना अंशनो, अनुभव आजे थाय लालरे,
विजयनेमिसूरीशनो, अमृत एम गुण गाय लालरे,
मुनि० ६.

श्री नमिनाथ प्रभुनुं स्तवन.

(तुमे बहु मैत्री रे साहेबा—ए राग.)

मिथिला भूषण वंदीये विजय नरेन्द्र कुमार;
वप्रा माताजी उर सं[1]रे, हंस जगतनो आधार. मिथिला. १
गर्भ थकी पण शत्रुओ, नमीआ जास प्रभाव;
ते प्रभुने नमता थका, थाये कर्म अभाव. मिथिला. २

---

३ भयंकर भवसमुद्र ४ आत्मानन्दना अंशनो,
१ हृदयरूप सरोवरमां हंस समान

पांत्रीस गुण वाणी वदे, चोत्रीस अतिशयवंत,
दर्शनथी जिनरायना, भांजे भवभय फंद. मिथिला ३
स्तवतां स्मरतां भावथी, धरतां प्रभुतुज ध्यान,
नमतां नयन निहालतां, थाये क्रोडी कल्याण. मिथिला
पुण्यानुबंधी पुण्यथी, अमृत दायक देव;
नेमिसूरिनो सेवक, पामी करतुं सुसेव. मिथिला. ५

श्री नेमिनाथ प्रभुनुं स्तवन

(हारे मारे ठाम धर्मना साडा पचवीस देश जो)

हांरे मारे नेमिजिनेश्वर सुमतिदायक देव जो,
दर्शन पुण्य उदयथी एहनुं पामीये रे लोल,
हांरे मारे विज्ञानाढ्य सुसिध्धिनायक नाथ जो,
कुसुम सुगंध शरीरनिधान दया तणो रे लोल १
प्रभु पादपद्म पूजीने गुण गण गाय जो,
अमृत भक्ति करता नंदन वासीयो रे लोल;
हांरे मारे अति लावण्य प्रकाशक सूर्य स्वरूपजो,
नयन कमळथी देखी गिर्वाणो नमेरे लोल २

---

१ केवळज्ञाने करीने मनोहर २ नन्दनवनवासी देवता,ओ ३ देवे.

हांरे मारे विद्याधरनो वृन्द नमे बहुमानजो,
पूजी अक्षय धनने पामे मथीरे लोल;
हांरे मारे कस्तुरी सम श्याम सुनिर्मळ देहजो,
जित निशान चढाव्युं, जिती मोहनेरे लोल. ३

हांरे मारे पूर्ण सोम जिम आह्लादक जिनचन्दजो,
बोधिरत्न सुभद्र अमरे आपो मनेरे लोल;
हांरे मारे आप समान सुमित्र न जगमां कोयजो,
वीर बनीने सहायकरे जे विश्वनेरे लोल. ४

हांरे मारे राजिमती त्यागीने जइ गीरनारजो,
चोपन दिवसे घाती कर्मो भेदीयां रे लोल;
हांरे मारे केवळ पामी कीधो जग उपकारजो,
नेमिसूरिनो सेवक अमृत एम भणेरे लोल. ५

---

५ अभिमानरूपी महान् हाथी, ६ आत्मधन ज्ञान, दर्शन, चारित्र, वि०, ७ पूर्णिमानो चन्द्र, ८ सम्यक्त्वरत्न, ९ कल्याणकारी १ मापा मपामे तेवुं.

॥ श्रीपार्श्वनाथ प्रभुनु स्तवन. ॥

(सिद्धचक्रवर कीजे नरभवलाहो लीजे जी—ए राग.)

पुरिसादाणी[1] पार्श्वजिनेश्वर, नेक नजर[2] जरी कीजेजी,
सेवक शरणे आव्यो साहिब, विनतडी तस लीजे,
सुणजो साहेबजी. १

तुज विण आ संसारे भमतां, जे दुःखो मे सहीयारे,
ते स्मरतां पण कंपे हइडुं, मुखथी जाय न कहीया.
सुणजो० २

क्षुल्लक[3] भव साडासत्तर में, श्वासोश्वासें करीयां रे,
बि ति चउरिन्द्रियपणामां, जन्म मरण दुःख सहीया.
सुणजो० ३

पशुपंखीभवपारधि[4] पीड्यो मच्छभवे मच्छी[5] ग्रहीयो रे,
परमाधामीना परितापो, बहुवरसो हुं सहीयो.
सुणजो० ४

---

१ पुरुषोने ग्रहण करवा लायक, २ दयादृष्टि, ३ नानामां नाना भव, ४ शिकारी, ७ मच्छीमार

शरण रहीत जाणी बहुपीडे, आंतर वैरी मुजनेरे,
केवळज्ञान दिवाकर देवा, कांइ अजाण्यु न तुजने.
सुणजो० ५.
भवदुःखोथी मुक्ति जिनजी, देव दयाळु दीजे रे,
नेमिसूरिनो अमृत बोले, सेवक सुखीयो कीजे
सुणजो० ६

॥ श्री महावीरस्वामिनु संस्कृत स्तवन ॥

(सोलमा श्री जिनराज ओळग सूणो अमतणी-ए राग.)

श्रेयः साधनसज्जसुमनसां संहतिः,
संस्कृतसंस्तवसंयोजनसक्तममतिः ।
भक्तिभरानतभव्यसुगात्रैः कृतनतिः,
कुरुते श्रीमहावीरप्रभो ते संस्तुतिम् ॥ १ ॥
स्तुत्वा स्वर्गसुखानि न किञ्चिन्मन्यते,
तव सेवारसजलजे सा हंसायते ।
इत्थं स्तोतुं शक्त्या विकलोऽपि प्रभो !
कुर्वे भक्त्याकृष्टस्ते स्तवनं विभो ! ॥ २ ॥

---

६ काम क्रोधादिक, ७ छुटकारो.

सर्वगुणा समुपेत्य श्रयन्ते त्वां मुदा,
आश्रयरहिता महिता मुनिपतिभिः सदा।
दोषाणां येषां देवाः सङ्ग्रहपराः,
ते निःस्पृहपरमात्मन् त्वय्यकृतादराः ॥ ३ ॥

तव मूर्त्तिर्मम नेत्रानन्दविस्तारिणी,
शुद्धस्वरूपनिदर्शनद्वारा तारिणी।
विश्वजनीना वाणी सुधारससारिणी,
भवति भविनां जन्मजराभयवारिणी ॥ ४

तव सेवा संहरते कर्मरिपोर्व्यथाम्,
कारोग्यायुर्वैभवविभुतायां कथा।
सत्यं मन्ये तन्मुनिपैर्यद् भण्यते,
पुण्यानां पुञ्जैस्त्वच्छासनमाप्यते ॥ ५ ॥

त्वं माता त्वं भ्राता त्वं बन्धुः पतिः,
मुक्त्वा त्वां नान्यस्मिन् देवे मे रतिः।
निःशरणेऽस्मिन् विश्वे शरणं ते प्रभो,
नेमिसूरिशिष्यायामृतपदं विभो ॥ ६ ॥

श्री महावीर प्रभुनुं स्तवन.

(प्रथम जिनेश्वर प्रणमीए—ए राग,)

सुरपति सेवित सेविये, शासन नायक देव;
कापी भव भय फन्द, दीये शिव शर्मने,[1]
सुरतरु जेम जस सेव १.

नहिं अज्ञान (१) न क्रोध (२) छे, नहि मद (३) अष्ट[2]
प्रकार;
मान (४) नहीं नही लोभ [५] न माया (६) रति
(७) नही, नहीं जस अरति (८) विकार, २

निद्रा (९) शोक (१०) दूरे थयां, अलिय वयण[3] (११)
नहीं जास,
चँउविह[4] चोरी (१२) मच्छर (१३) नहिं जे देवने,
केम होवे भय (१४) तास ३

प्राणिवध (१५) नहि (१६) प्रेम के, जरी पण क्रीडा
(१७) प्रसंग,

---

१ मोक्षसुख २ आठ प्रकारना मद
३ असत्य वचन ४ चार प्रकारनी (स्वामी अदत्त वि०) चोरी

हास्य (१८) नहिं एम, अष्टादश दोषो नही,
जस तस करीये सुसंग ४
भव्य कमल विकसावतां, जिनजी भानु प्रकाश,
खजुआँ जेवां अन्योनु त्यां शु गजुं,
जे हृदये तुम वास, ५
आ काळे अम भाग्यथी, आ भरते जो आप,
होते तो आनन्दादिक पेठे प्रभु,
दुरी करते ताप. ६
पण प्रभुजी तुज प्रतिनीधि, प्रतिमा श्री सिद्धान्त,
नेमिसूरीनो अमृत बोले भक्तिथी
भजी पामीश लोकान्त ७

॥ श्री महावीर प्रभुनु स्तवन ॥

(हो पियु पंखीडा नारी गुणावळी तामजो–ए राग,)
हो प्रभु मुज प्यारा सांप्रतशासन इश जो,
विश्वोद्धारक तारक भव्य समूहनो रे लोल;

१ अढार ६ सूर्य ७ आगीया (जीवडा).
८ आनन्द कामदेव वि० श्रावको ९ मोक्षपद.
१ वर्तमान शासन नायक.

हो प्रभु मुज प्यारा गुण रत्नाकर आपजो,
हुं अज्ञाने भरीयो दरीयो दोषनो रे लोल १,

हो प्रभु मुज प्यारा आन्तरवैरी वृन्द जो,
जीत्यो आपे जीतायो हुं एहथी रे लोल;
हो प्रभु मुज प्यारा शुद्ध स्वरूप जिनेश जो,
हुं तो विंटायो छुं अडविध कर्मथी रे लोल, २

हो प्रभु मुज प्यारा आप सदा वीतरागजो,
रागी थइ हुं रखडुं छुं संसारमांरे लोल;
हो प्रभुमुज प्यारा मेरु जिम तुम स्थिर जो,
चंचलता छे अतिशय म्हारा चित्तमांरे लोल. ३

हो प्रभु मुज प्यारा आप अखण्डानन्द जो,
सांसारिक सुख दुःख हिंडोळे हुं चड्योरे लोल.
हो प्रभु मुज प्यारा मुक्ति सिधाव्यां आप जो,
आ ससार महोदधि मांहि हुं पड्योरे लोल; ४

---

२ समुद्र ३ काम क्रोधवि० षड्वर्ग, ४ आठ प्रकारनां
५ सम्पूर्ण आनन्दमय ६ हिंचके. ७ महासागर

हो प्रभु मुज प्यारा आप दया भण्डार जो,
श्री महावीर दयानुं स्थानक हुं ठर्यारे लोल;
हो प्रभु मुज प्यारा चण्डकोशीयो नाग जो,
अति दुःखो सहीने पण आपे बुझव्योरे लोल. ५.
हो प्रभु मुज प्यारा श्री गौतममहाराज जो,
स्नेह करावी साथी कीधा मोक्षनारे लोल;
हो प्रभु मुज प्यारा तीर्थंकर पद दान जो,
दीधुं भक्तिभर८थी श्रेणिकरायनेरे लोल. ६.
हो प्रभु मुज प्यारा आनन्दादिक जेम जो,
अमृत दृष्टि वृष्टिथी सींचो मनेरे लोल;
हो प्रभु मुज प्यारा जेम पामुं भवपार जो,
नेमिसूरिनो सेवक एणी परे भणेरे लोल. ७.

॥ श्री महावीर स्वामीनुं स्तवन. ॥

(संयमथो सुखपामीए ए राग)

शासननायक विनवुं, विनतडी अवधार जिणन्दजी;
तुज शासन अनुयायिने, महारे तुज आधार जिणंदजी१
शासन० १

८ अतिशयभक्तिथी १ आनन्द कामदेव, वि०

दानवीर शूरवीर तुं. कर्मवीर[1] धर्मवीर जिणंदजी.
साडाबार वरस लगे, तप कीधुं थइ धीर जिणंदजी शा० २

धन्य ते त्रिशला माततने, धन्य सिद्धारथ राय जिणंदजी
धन्य क्षत्रिय कुण्ड ग्रामने, ज्यां मुज जिनजी थाय
जिणन्दजी शा० ३

तुज शासनचिन्तामणि,[2] कर तुं बहु उपकार जिणंदजी
दिव्यै नयणने आपतुं, वर्ते छे जयकार जिणंदजीशा० ४

अमृतदृष्टिवृष्टिथी,[3] सींच्या, बहु जीव जेम जिणंदजी,
नेमिसूरिना शिष्यने, मुक्ति पद द्यो एम जिणंदजीशा.० ५

॥ श्री स्तम्भनपार्श्वजिन स्तवन १. ॥

(सोळमा श्री जिनराज ओळग सूणो अमतणी ए राग.)

मोटो महिमा श्री थम्भणप्रभु ताहरो,
सुणतां भवभय फन्द टळे सवी माहरो;
सेवा सुरनां इन्द्रो पण त्हारी करे,
नयनो म्हारां तुज प्रतिमा देखी ठरे. ।१।

---

१ कर्मरूपशत्रुप्रत्ये वीर, अथवा कार्य करवामां वीर २ इच्छित वस्तुपनारुं रत्न ३ आज्ञानवृष्टि

लक्ष एकादश वर्ष[1] वरुणे भावथी,
आ रामे सत्तमास[2] दिवसनव ल्हावथी;
असीई[3] सहस्र संवत्सर सेवी तक्षके,
सौधर्मेन्द्रे वरसोनां वरसो लगे. ।२।

नेमिजिनेश्वर मुखथी महिमा सांभळी,
द्वारिकानयरीमां श्रीकृष्णे वळी;
पूजी प्रेमे सागरथी श्रेष्ठीवरे,
आणी कान्तिनयरे सेव घणी करे. ।३।

स्तम्भित करवा रसने सुरस्हाये ह्यौं,
सेढीनीरे आणी एकान्ते ठव्यां;
इच्छा पूरीप्रेमे नागार्जुन तणी,
वांछित दायक कल्पतरु छो जगधणी ।४।

अभयदेवसूरिने सुरपति दाखवे,
जयतिहुयणस्तोत्रे सूरिराया स्तवे;
प्रगट थयां अम पुण्य महोदयथी प्रभु,
भवजलतारणजहाज जगतमां छो विभु. ।५।

---

१ अग्यारलाख वरस, २ सातमासने नव दिवस ३ एंशी हजार वर्ष, ४ जगावे,

पार्श्वमणि छो प्रभु मुज चेतनलोहने,
स्वर्णपणु निजऋद्धि तुम संगे बने;
अमृतदृष्टि वृष्टिथी सिंचो मने,
भक्तिभरथी नेमिसूरि सेवक भणे. । ६

॥ श्री थंभणपार्श्वजिन स्तवन २. ॥

(आवो आवो पासजी मुज मळीआ –ए रात)

थंभणप्रभु पासजी सुखदीजेरे, मुजविनतडी मनलीजे;
थंभणप्रभु पासजी सुखदीजेरे.–ए आंकणी.
प्रभुमहिमा अतिशय मोटोरे,
जगमां नहीं एहनो जोटो रे;
वर्णनमां शब्दनो तोटो. थंभण० १.

प्रभु वरुणे पूज्या कामेरे, सौधर्मेन्द्रे श्रीरामेरे;
धरणेन्द्रे शुभ परिणामे. थंभण० २.

प्रभुनेमिजिनेश्वर पासेरे, सूणो महिमा द्वारिकावासेरे;
पूज्या श्रीकृष्णे उल्लासे थंभण० ३.

---

४ सुवर्णपणुं. ६ अतिशयभक्तिथी.
१ वर्णनकरवामां २ इच्छाथी,

प्रभु कान्ति पावनकीधीरे, नागार्जुने हठ लीधीरे;
तुज द्रष्टे थइ रससिद्धि. थंभण० ४.

प्रभु जयतिहुयणथी स्मरतांरे, सूरिजीनां रोगोहरतांरे
नवअंगनी टीका करतां थंभण० ५.

प्रभु तुं अमृत पददाइरे, प्रणये सेवीश सदाइरे,
सिरि नेमिसूरि सुपसाइ थंभण० ६,

॥ श्री थंभणपार्श्वजिन स्तुति ॥

(सेवक अरज करे छे राज अमने शिवसुख आपो ए-राग)

परमप्रभु थंभणपास, वन्दु भावधरीने आजे
वन्दु भाव धरीने आज,अविचल शिवसुख लेवाकाजे
ए आंकणी

प्रगटप्रभावी परमदयाळु, तुज दर्शनथी हरखुं,
कृपादृष्टिं किंकर पर करजो, जेम शीवनगरी नीरखुं १

---

२ (रससिद्धि करवानो) आग्रह.
१ चाकर

सौधर्मेन्द्रे श्रीधरणन्द्रे, वळी वरुणे बहु भावे.
पूज्या रामे कृष्णे प्रभुगुण,निर्भागी मन नावे.परम० २

पारसमणिनां परिचयथी जेम, लोढु बने छे सोनुं,
एवी रीते आप सुसंगे, कार्य न सीझे कोनुं?—परम०३

दृष्टिमात्रथी नागार्जुने जेम दीधी रससिद्धि,
तेवी रीते आपो अमने, निज आतमनीरिद्धि—परम ४

शुद्ध हृदयनी अरज सुणीने, अमअन्तरमां आवो
नेमिसूरिनो अमृतबाले, लउ मानवभव ल्हावो--परम५

॥ श्री चिन्तामणिपार्श्वजिन स्तवन ॥

(सेवक अरज करे छे राज अमने शिवसुखआपो ए—राग)

जिनजीश्री चिंतामणिपास, भवभयचिन्ता म्हारी चूरो
चूरो चूरोने महाराज; मोक्षतणी इच्छा मुजे पुरो;
कृपादृष्टिनी आशाए हुं, नाथ निरंजन आव्यो;
भाग्योदयथी भवभयभंजन,दर्शन तारुं पाम्यो, जि०१

ध्यानानेलथी कर्मन्धनने; खाख करीने क्षणमां,
आप थयां छे शिवसुखभोगी, सेवक रखडे रणमां,जि.२

---

१ ध्यानरूपी अग्निथी २ कर्मरूपी काष्ठ.

सेव्य सेवकनो ए अन्तर शुं, उचित गणाए स्वामी,
दयादृष्टिथी ए अन्तरने छेदो अविचलनामी जि० ३
तापसनी धूणीथी आवे, बलतो नाग कढाव्यो,
सेवक मुख नवकार सुणावी, ने धरणेन्द्र बनाव्यो जि. ४
एवी रीते स्वर्ग गयां कै, कैक तर्यां भवजलने,
अमृतपदनी[3] आश आपथी, नेमिसूरिपदरजने जिन० ५

॥ चतुर्विंशतिजिनस्तुतयः ॥

(छन्द–मंदाक्रान्ता)

जेहणे कीधी सकलजनता[1] नीतिने जाणनारी,
छोडी राज्यादिक विभवने जे थया मौनधारी,
वहेतो कीधो सुगम सघळो मोक्षनो मार्ग जहेणे,
वन्दु छुं हुं ऋषभजिनने धर्मधोरी[2] प्रभुने, १

देखी मूर्ति अजितजिननी नेत्र म्हारां ठरे छे,
ने हैयुं आ फरी फरी प्रभु ध्यान त्हेनुं धरे छे.

---

३ मोक्षनी

१ जन समुदाय, २ धर्मधुराने

आत्मा म्हारो प्रभु तुज कने आववा उल्लसे छे.
आपो एवुं बळ हृदयमां माहरी आश ए छे, २
जे शान्तिनां सुखसदनमां मुक्तिमां नित्य राजे,
जेहनी वाणी भविक जननां चित्तमां नित्य गाजे,
देवेन्द्रोनी प्रणयभरनी भक्ति जेनेज छाजे,
वन्दु ते संभवजिनतणां पादपद्मे हुं आजे, ३
चोथा आरा रूप नभ विषे दीपतां सूर्य जेवा,
घाती कर्मो रूप मृग विषे केसरी सिंह देवा,
साचे भावे भविक जनने आपता मोक्ष मेवा,
चोथा स्वामी चरण युगले हुं चहुं नित्य रहेवा, ४
आ संसारे भ्रमण करतां शान्ति माटे जिनेन्द्र,
देवो सेव्यां कुमति वशथी में बहुए मुनीन्द्र;
तोए नाव्यो भवभ्रमणथी छुटकारो लगारे,
शान्तिदाता सुमति जिनजी देव छे तुंज मारे. ५
सोना केरी सुरविरचिता पद्मनी पंक्ति सारी,
पद्मो जेवा प्रभुचरणना संगथी दीप्तिधारी;

वहनकरनार, ३ गृह. ४ अतिशयप्रेम ५ आकाश
१ देवताओए रचेली, २ प्रकाशवाळी.

देखी भव्यो अति उलटथी हर्षना आंसु लावे,
ते श्री पद्मप्रभ चरणमां हुं नमुं पूर्ण भावे. ६

आखी पृथ्वी सुखमय बनी आपने जन्मकाले,
भव्यो पूजे भयरहित थइ आपने पूर्ण व्हाले;
पामे मुक्ति भवभयथकी जे स्मरे नित्यमेव,
नित्ये वन्दु तुम चरणमां श्री सुपार्श्वेष्टदेव. ७

जेवी रीते शशीकिरणथी चंद्रकान्त[३] द्रवे छे,
तेवी रीते कठीण हृदये हर्षनो धोध व्हे छे;
देखी मूर्ति अमृत झरती मुक्तिदाता तमारी,
प्रीते चन्द्रप्रभ जिन भने आपजो सेव सारी. ८

सेवा माटे सुरनगरथी देवनो संघ आवे,
भक्तिभावे सुरगिरि परे स्नात्र पूजा रचावे;
नाट्यारंगे नमन करीने पूर्ण आनन्द पावे,
सेवा सारी सुविधिजिननी कोणने चित्त नावे. ९

आधिव्याधिप्रमुख बहुए तापथी तप्त प्राणी,
शीळी छाया शीतलजिननी जाणीने हर्ष आणो;

---

३ चंद्रथी द्रवित थनार मणि.

नित्ये सेवे मन वचनने कायथी पूर्णभावे,
कापी खंते दुरितगणने पूर्ण आनन्द पावे. १०

(शार्दूलविक्रीडित)

जे हेतुविण विश्वना दुःख हरे न्हाया विना निर्मळा,
जीते आन्तर शत्रुने स्वबळथी द्वेषादिथी वेगळा;
वाणी जे मधुरी वदे भवतरी गंभीर अर्थे भरी,
ते श्रेयांस जिणंदना चरणनी चाहुं सदा चाकरी. ११

जे भेदाय न चक्रथी न असिथी के इन्द्रना वज्रथी,
एवा गाढ कुकर्म हे जिनपते छेदाय छे आपथी;
जे शान्ति नव थाय चन्दन थकी ते शान्ति आपो मने,
वासुपूज्य जिनेश हुं प्रणयथी नित्ये नमुं आपने. १२

(मन्दाक्रान्ता)

जेवी रीते विमल जलथी वस्त्रनो मेल जाय,
तेवी रीते विमल जिनना ध्यानथी नष्ट थाय;

---

१ पापनो समूह, २ क्रोधादि कषायो, ३ तलवार, ४ स्नेह

पापो जूना बहु भव तणा अज्ञताथी करेला,
ते माटे हे जिन तुज पदे पण्डितो छे नमेला. १३

जेओ मुक्ति नगर वसता काळ सादिअनंत,
भावे ध्यावे अविचलपण जेहने साधु सन्त;
जेहनी सेवा सुरमणिपरे सौख्य आपे अनन्त.
नित्ये म्हारा हृदय कमळे आवजो श्री अनन्त. १४

संसारांभोनिधिजळविषे बुडतो हुं जिनेन्द्र,
तारो सारो सुखकर भलो धर्म पाम्यो मुनीन्द्र;
लाखो यत्नो यदि जन करे तोय ना तेह छोडुं,
नित्ये धर्म प्रभु तुज कने भक्तिथी हाथ जोडुं. १५

जाण्या जाये शिशुं सकळना लक्षणो पारणाथी,
शान्ति कीधी पण प्रभु ते मातना गर्भमांथी;
षट्खंडोने नवनिधि तथा चौद रत्नो तजीने,

---

१ मूर्खता,

१ आदिसहित अने अन्तरहित, अेटले मुक्तिगमननी आदि होवाथी सादि अने पाछुं आववानो अभाव होवाथी अनन्त.

१ संसाररूप समुद्रना पाणीमां, २ बाळक,

पाम्या छो जे पर पैदने आपजो ते अमोने. १६

जेह्नी मूर्ति अमृत झरती धर्मनो बोध आपे,
जाणे मीठुं वचन वदती शोक संताप कापे;
ज्हेनी सेवा प्रणय भरथी सर्व देवो करे छे,
ते श्री कुन्थु जिन चरणमां चित्त मारुं ठरे छे. १७

जे दुःखोना विषमगिरिओ वज्रनी जेम भेदे,
भव्यात्मानी निबिड जडता सूर्यनी जेम छेदे;
जेह्नी पासे तृण समगणे स्वर्गने इन्द्रजेवा,
एवी सारी अरजिन मने आपजो आप सेवा. १८

तार्यां मित्रो अतिरूपवती स्वर्णनी पुतळीथी,
एवी वस्तु प्रभु तुज नथी बोध ना थाय जेथी।
सच्चारित्रे जन मन हरी बाळथी ब्रह्मचारी,
नित्ये मल्लि जिनपति मने आपजो सेव सारी. १०

(शार्दूल विक्रीडित.)

अज्ञानांधकृति विनाश करवा जे सूर्य जेवा कह्या,

३ मोक्ष, ४ सोनानी, ५ उत्तम चरित्रवडे. १ अंधारुं,

जेणे अष्ट प्रकारना कठिन जे कर्मो बधां ते दह्यां;
जेनी आत्मस्वभावमां रमणता जे मुक्तिदाता सदा,
एवा श्री मुनिसुव्रतेश नमीए जेथी टळे आपदा. २०

वैरीवृन्द नम्यो प्रभु जनकने गर्भप्रभावे करी,
कीर्ति चन्द्रकरोज्ज्वला दिशिदिशि आ विश्वमां विस्तरी;
आपी बोध अपूर्व आ जगतने पाम्या प्रभु शर्मने.
पुण्ये श्री नमिनाथ आप चरणे पाम्यो खरा धर्मने. २१

लोभावे ललनातणा ललितं शुं त्रिलोकनां नाथने,
कम्पावे गिरिभेदी वायु लहरी शुं स्वर्णनां शैलने;
शुं स्वार्थे जिनदेव ए पशुतणा पोकारने सांभळे,
श्रीमन्नेमिजिनेन्द्र सेवनथकी शुं शुं जगे ना मळे. २२

धूणीमां बळतो दयानिधि तमे ज्ञाने करी सर्पने,
जाणी सर्वजनो समक्ष क्षणमां आपी महामन्त्रने;

२ पिताने, नमिनाथ प्रभुना पिताने. प्रभु मातानां गर्भमां आव्या पछी शत्रुओ आवीने नम्या हता. तेथीज नमिनाथ एवुं नाम पाडवामां आव्युं हतुं. ३ चन्द्रनां किरण जेवी उजळी, ४ मोक्ष सुखने ५ स्त्रीओनां ६ हाव भाव ७ पर्वतने पण उखेडी नाखनारी ८ मेरु पर्वतने ९ पोताना माटे.

कीधो श्री धरणेन्द्रने भवथकी तार्यां घणा भव्यने,
आपो पास जिणन्द नाशरहिता सेवा तमारी मने. २३

श्री सिद्धार्थ नरेन्द्रना कुल नभे भानुसमा छो विभु,
म्हारा चित्त चकोरने जिन तमे छो पूर्ण चन्द्र प्रभु;
पाम्यो छुं पशुता तजी सुरपणुं हुं आपना धर्मथी,
रक्षा श्री महावीरदेव मुजने पापी महाकर्मथी. २४

---

१ आकाशमां ११ देवपणुं.

परमार्हत यशस्वी धर्मशील महाराजाधिराज

श्रीकुमारपालकृत आत्मनिन्दारूप जिनेन्द्रस्तुतिनो

रहस्यात्मक पद्यानुवाद.

छंद हरिगीत.

(रळीयामणी गुजरात जोवाजोग जेवी जाणजो.)

सर्वे सुरेन्द्रोना नमेला मुकुट त्हेनां जे मणी,
त्हेनां प्रकाशे झलहळे पदपीठ[1] ने त्हेनां धणी;
आविश्वनां दुःखो बधाये छेदनारा हे प्रभु,
जयजय थजो जगबन्धु तुम एम सर्वदा इच्छुं विभु. १

१ पगमूकवानुं आसन,

वीतराग हे कृतकृत्य भगवन् आपने शुं विनवुं,
हुं मूर्ख छुं महाराज जेथी शक्तिहीन छतां स्तवुं;
शुं अर्थिवर्ग यथार्थ स्वामीनु स्वरूप कही शके,
पण प्रभो पुरी भक्ति पासे युक्तिओ ऐना टके॥२॥

हे नाथ निर्मल थइ बस्यां छो आप दूरे मुक्तिमां,
तोये रह्यां गुण ओपतां मुजचित्तरूपी शुक्तिमां;
अतिदूर एवो सूर्य पण शुं आरसीना[1] संगथी,
प्रतिबिंब रूपे आवी अहीं उद्योतने करतो नथी ॥३॥

प्राणीतणां पापो घणां भेगां करेला जे भवे[2],
क्षीण थाय छे क्षणमां बधां ते आपने सारे स्तवे;
अतिगाढ अंधारातणुं पण सूर्य पासे शुं गजुं,
एम जाणीने आनन्दथी हु आपने नित्ये भजुं ॥४॥

शरण्य करुणासिन्धु जिनजी आप बीजा भक्तनां,
महामोहव्याधिने हणो छो शुद्ध सेवासक्तनां[3],
आनन्दथी हु आप आणा मस्तके नित्ये वहुं,
तोये कहो कोण कारणे ए व्याधिनां दुःखो सहुं[4] ॥५॥

---

१ दर्पण. २ संसारनां. ३ सेवामां आसक्तनां, ४ वेठुं.

संसाररूप महाटवीनां सार्थवाह प्रभु तमे,
मुक्तिपुरी जावा तणी इच्छा अतिशय छे मने;
आश्रय कर्यों तेथी प्रभो तुज तोय आन्तरतस्करो,
मुज रत्नत्रय लूटे विभो रक्षा करो रक्षा करो ॥६॥

बहुकाळ आ संसारसागरमां प्रभु हुं संचर्यो,
थइ पुण्यराशि एकठी त्यारे जिनेश्वर तुं मळ्यो;
पण पापपुञ्ज समान हुं भक्ति बराबर नव करुं,
जइ कल्पवृक्ष कने प्रमादी एम हुं भुखे मरुं ॥७॥

आ कर्मरूपकुलाल मिथ्याज्ञानरूपी दण्डथी;
भवचक्र नित्य भमावतो दीलमां जरी डरतो नथी;
करी पात्र मुजने पुञ्ज दुःखनो दाबीदाबीने भरे;
विणआप आ संसार कोण रक्षा कहो एथी करे? ॥८॥

क्यारे प्रभो संसारकारण सर्वममता छोडीने,
आज्ञा प्रमाणे आपनी मन तत्त्वज्ञाने जोडीने,
रमीश आत्मविषे विभो निरपेक्षवृत्ति थै सदा,
तजीश इच्छा मुक्तिनी पण सन्त थइने हुं कदा ?॥९॥

तुज पूर्णशशिनी कान्ति सरखा कान्तगुणदृढदोरथी,
अतिचपल मुज मन वांदराने बांधीने बहु जोरथी;
आज्ञारूपी अमृत रसोना पानमां प्रीति करी,
पामीश परब्रह्म रति क्यारे विभावो विसरी ॥१०॥

हुं हीनथी पण हीन पण तुम चरणसेवने बळे,
आव्यो अहीं उंची हदे जे पूर्ण पुण्यथकी मळे;
तोपण हठीली पापो कामादिकतणी टोळी मने,
अकार्यमां प्रेरे पराणे पीडती निर्दयपणे ॥११॥

कल्याणकारीदेव ? तुम सम स्वामी मुज माथे छते,
कल्याण कोण न संभवे जो विघ्न मुज नव आवते,
पण मदन आदिक शत्रुओ पूंठे पड्याछे माहरे,
दूरे करुं शुभभावनाथी पापीओ पण नव मरे ॥१२॥

संसार रूप समुद्रमां भ्रमता अनादिकाळथी,
हुं मानुछुं के आप कदी मुज दृष्टिए आव्यां नथी;
नहींतर नरकनी वेदना सीमा विनानी में प्रभु,
बहु दुःखथी जे भोगवी ते केम पामुं हुं विभु?॥१३॥

तरवार चक्र धनुष्यने अंकुशथी जे शोभतुं,
वज्रप्रमुख शुभचिन्हथी शुभभाववल्ली रोपतुं;
संसारतारक आपनुं एवुं चरणयुग निर्मलुं,
दुर्वार एवा मोह वैरीथी डरीने में श्रयुं ॥१४॥

निःसीम करुणाधार छो छो शरण आप पवित्र छो,
सर्वज्ञ छो निर्दोष छो ने सर्व जगना नाथ छो;
हुं दीनछुं हिम्मतरहीत थै शरण आव्यो आपने,
आ कामरूपी भिल्लथी रक्षो मने रक्षो मने ॥१५॥

विणआप आजगमां नथी स्वामी समर्थ मळ्यो मने,
दुष्कृत्यनो समुदाय मोटो जे प्रभु मारो हणे;
शुं शत्रुओनुं चक्र जे बहु दुःखथी देखायछे,
विण चक्र वासुदेवना ते कोइरीत हणायछे. ! ॥१६॥

प्रभु देवनां पण देव छो वळी सत्य शंकर छो तमे,
छो बुद्धने आ विश्वत्रयने छो तमे नायकपणे;
ए कारणे आन्तररिपुसमुदायथी पीडेल हुं,
हे नाथ तुम पासे रडीने हांर्दनां[1] दुःखो कहुं ॥१७॥

१हृदयनां

अधर्मना कार्यों बधां दूरे करीने चित्तने,
जोडुं समाधिमां जिनेश्वर शान्त थै हुं जे समे;
त्यां तो बधाये वैरीओ जाणे बळेला क्रोधथी,
महामोहनां साम्राज्यमां लइ जाय छे बहुजोरथी १८

छे मोहआदिक शत्रुओ म्हारां अनादि काळनां,
एम जाणुं छुं जिनदेव प्रवचनेपानथी[1] हुं आपनां;
तोये करी विश्वास एनो मूढ मैंढो हुं बनुं,
ए मोहबाजीगरकने कपिरीतने[2] हुं आचरुं ॥१९॥

ए राक्षसोनां राक्षसो छे क्रूरम्लेच्छो एज छे,
एणे मने निष्ठुरपणे बहुवार बहु पीडेल छे;
भयभीत थै एथी प्रभु तुम चरण शरणुं में ग्रह्युं,
जगवीर देव बचावजो में ध्यान तुम चित्ते धर्युं २०

क्यारे प्रभो निज देहमां पण आपबुद्धिने[3] तजी,
श्रद्धाजळे शुद्धिकरेलाविवेकने चित्ते सजी;
सम शत्रु मित्र विषे बनी न्यारो थइ परभावथी,
रमीश सुखकर संयमे क्यारे प्रभो आनन्दथी ? २१.

---

१ सिद्धांतरसनां श्रवणथी २ वांदरानी रीतने ३ ममत्वबुद्धिने

गतदोष गुणभंडार जिनजी देव म्हारे तुंज छे,
सुरनरसभामां वर्णव्यो जे धर्म म्हारे तेज छे;
एम जाणीने पण दासनी मत आप अवगणना करो,
आ नम्र म्हारी प्रार्थना स्वामी तमे चित्ते धरो ॥२२॥

षड्वर्ग[1] मदनादिकतणो जे जीतनारो विश्वने;
अरिहन्त उज्वळ ध्यानथी त्हेने प्रभु जीत्यो तमे,
अशक्त तुम प्रत्ये हणे तुम दासने निर्दयपणे,
ए शत्रुओने जीतुं एवुं आत्मबळ आपो मने ॥२३॥

समर्थ छो स्वामी तमे आ सर्व जगने तारवा,
ने मुज समा पापी जनोनी दुर्गतिने वारवा;
आ चरण वळग्यो पांगळो तुम दास दीन डुभाय छे,
हे शरण शुं सिद्धिविषे संकोच[2] मुजथी थायछे?॥२४॥

तुम पादपद्म रमे प्रभो नित[3] जे जनोनां चित्तमां,
सुर इन्द्र के नरइन्द्रनी पण ए जनोने शी तमा[4]?;
त्रण लोकनी पण लक्ष्मी एने सहचरी[6] पेठे चहे,
सद्गुणोनो शुभगन्ध एना आत्ममांहे महमहे ॥२५॥

---

१ काम; क्रोध; मान; वि० २ संकडामण ३ हंमेशां ४ परवा
६ सखी

अत्यन्त निर्गुण छुं प्रभो हुं क्रूर छुं हुं दुष्ट छुं,
हिंसक अने पापे भरेलो सर्व वाते पूर्ण छुं,
विण आप आलंबन प्रभो भवभीमसागर संचरुं,
मुज भवभ्रमणनी वात जिनजी आप विण कोने करुं?॥२६

मुज नेत्ररूप चकोरने तुं चन्द्ररूपे सांपड्यो,
तेथी जिनेश्वर आज हुं आनन्द उदधिमां पड्यो,
जे भाग्यशाळीहाथमां चिन्तामणि आवी चडे;
कइ वस्तु एवी विश्वमां जे तेहने नव सांपडे ॥२७॥

हे नाथ आ संसारसागर डूबता एवा मने,
मुक्तिपुरीमां लइ जवाने ज्हाजरूपे छो तमे;
शिवरमणीनां शुभसंगथी अभिराम[1] एवा हे प्रभो,
मुज सर्व सुखनुं मुख्यकारण छो तमे नित्ये विभु।२८

जे भव्यजीवो आपने भावे नमे स्तोत्रे स्तवे,
ने पुष्पनीमाला लइने प्रेमथी कंठे ठवे;
ते धन्य छे कृतपुण्य छे चिन्तामणि तेने करे[2].
वाव्यो प्रभो निजकृत्यथी सुरवृक्षने एणे गृहे॥२९॥

---

१ मनोहर, २ हाथमां.

हे नाथ नेत्रो मींचीने चलचित्तनी स्थिरता करो,
एकान्तमां बेसी करीने ध्यान मुद्राने धरो
मुज सर्वकर्मविनाशकारण चिन्तवुं जे जे समे,
ते ते समे तुज मूर्ति मनहर,माहरे चित्त रमे. ॥३०॥

उत्कृष्टभक्तिथी प्रभो में अन्यदेवोने स्तव्यां,
पण कोइरीते मुक्तिसुखने आपनारा नव थया;
अमृतभरेला कुम्भथी[1] छो ने सदाए सींचीये,
आंबातणां मीठा फलो पण लींबडा क्यांथी दीये?॥३१

भवजलधिमांथी हे प्रभो करुणा करीने तारजो,
ने निर्गुणीने[2] शिवनगरनां शुभसदनमां धारजो,
आ गुणी आ निर्गुणी एम भेद मोटा नव करे,
शशी सूर्य मेघपरे दयालु सर्वनां दुःखो हरे. ॥ ३२ ॥

(शार्दूलविक्रीडितम्)

पाम्यो छुं बहुपुण्यथी प्रभु ! तने त्रैलोक्यना नाथने,
हेमाचार्य समान[3] साक्षी शिवना[4] नेता[5] मल्या छे मने,

१ घडाथी २ भलेने ३ जेवा ४ मोक्षनां ५ गुरु

एथी उत्तमवस्तु कोइ न गणुं ज्हेनी करुं मागणी
मागुं आदरवृद्धि तोय तुजमां ऐ हार्दनी लागणी॥ ३३॥

जाणी आर्हत गुर्जरेश्वरतणी वाणी मनोहारिणी
श्रद्धासागर वृद्धिचंद्र सरखी संताप संहारिणी ।
त्हेनो आ अनुवाद में स्वपरनां कल्याण माटे कर्यों
श्रीमन्नेमिसूरीन्द सेवनबळे जे भक्तिभावे भर्यों ॥३४॥

श्रीकुमारपालकृत आत्मनिन्दारूप जिनेन्द्रस्तुतिनो
रहस्यात्मकपद्यानुवाद—समाप्त.

॥ नमो नमः श्रीगुरुनेमिसूरये ॥

(अथ श्रीवैराग्यशतकं)

(सवैया)

(झेर गया ने वेर गयां— ए राग.)

श्री आदीश्वर शान्तिजिनेश्वर नेमिप्रभुने पास जिणन्द,
वीरविभु ए पांच प्रभुने छट्ठा श्रीगुरु नेमिसूरीन्द.
ए सर्वेने प्रणये प्रणमी समरी सरस्वती मात उदार,
रचुं 'वैराग्यशतक' आ सुखकर प्राचीन उक्तिने अनुसार॥१॥

बहुकाले बहुविधदुःख सहेतां धर्मक्रिया करवानो काल,
नरभवरूपे प्राप्त थयोछे पुण्यप्रचयथी चेतन हाल.
अल्पकालस्थायी सुखदायी सुर समकिती ज्हेने च्हाय,
दश दृष्टान्ते दुर्लभ एने हारी जइने जन पस्ताय.॥२॥

भरतक्षेत्रमां घरघर भोजन ब्राह्मणने आपे चक्रीश,
चोसठ सहस अन्तेउरी[1] जस नरपति सेवे सहस बत्रीश ।
दैवयोगथी एक घरे ते बीजी वखते जमवा जाय,
पण त्रिण सुकृत गतनरभव ते पाछो चेतन नहींज पमाय॥३॥

---

१ राणीओ.

भरतक्षेत्रनां सर्व धान्यनी देवे कीधी ढगली एक,
तेमां पाली सरसव नांखी लाव्यो डोशी वृद्ध ज छेक।
ते वृंडाथी कदाच सरसव सर्व धान्यथी भिन्न कराय,
पण विण० ॥ ४ ॥

दैवीद्यूतंकलाथी जीती श्रीमन्तोने वारंवार,
जे चाणाक्ये चन्द्रगुप्तनृपनो भरपूर भर्यो भंडार।
मानी ले के ते मन्त्री ते वणिकजनोथी पण जीताय,
पण० ॥ ५ ॥

एकहजारने आठ स्तम्भनी शाला स्तम्भे स्तम्भे हांस
अष्टोत्तरशत हार्या विण ते सर्व जीतवा नृपनी पास।
ए घटनाथी जीती जनकने राजपुत्र पण राजा थाय,
पण विण० ॥ ६ ॥

दूरदेशवासी वणिकोने श्रेष्ठिसुतोए आप्यां रत्न,
पितृवचनथी पश्चात्तापे तेज रत्न मेळववा यत्न।
करतां कोइ दिन सर्वरत्नथी जनकहृदय पण संतोषाय,
पण विण० ॥ ७ ॥

---

१ डोशीथी. २ देवाधिष्ठितपासावडे द्यत. ३ खूणाओ.
४ १०८.

पूर्णशशीने स्वप्ने देखी राजपुत्रने रंकविशेष,
विवकत्रिकल लहे रंक क्षीरने नृपसुत पाम्यो राज्यविशेष।
एज मठे सूतां स्वप्नामां जेह पूर्णेन्दु य जणाय,
पण० ॥ ८ ॥

राधानां मुख नीचे चक्रो सवळां अवळां फरतां चार,
तैलकटाहीमां[1] प्रतिबिम्ब निरखतो उभो राजकुमार।
ते राधानुं वामनेत्र[2] ते चपळवीरथी पण वींधाय,
पण विण सुकृत गत० ॥ ९ ॥

कच्छपे[3] देखी पूर्णचन्द्रने ह्रदमां दूर थये सेवाल,
आनन्दे ए जोणुं जोवा लइने आव्यो बाळगोपाळ।
मळीगये सेवाल सुधाकर[4] कच्छपथी य कदी निरखाय,
पण० ॥ १० ॥

पूर्वपयोधिमांहे समोलने धोंसरी पश्चिम जलधिमांय,
दुर्धरकल्लोले खेंचाता कोइकसमये भेगा थाय।
वळी समोल स्वयं ए युगनां[5] विवरविषे पण पेसी जाय,
पण० ॥ ११ ॥

---

१ तेलनीकडाइ. २ डाबी आंख ३ काचबो ४ चन्द्र.
५ धोंसरीना.

कोइ कुतुहली देवमणिमयस्तम्भनुं चूर्ण करीने जाय,
मेरुशिरे ए चूर्ण नळीमां नांखी सर्व दिशा विखराय।
ए अणुओने वीणी वीणी देवे पाछो स्तम्भ कराय,
पण विण० ॥ १२ ॥

उगे सूरज पश्चिममां ने पूर्वदिशामां अस्तज थाय,
सागर[1] मर्यादा मुके ने सिंह कदी खडने पण खाय।
चन्द्र थकी अंगार झरे ने वासीदे सांबेलुं जाय,
पण० ॥ १३ ॥

शाने मान धरेछे चेतन केम हसेछे थइ मस्तान,
कनककामिनी झंखे शाने व्यसन विषे थइने गुल्तान।
मृत्युराक्षस जो आ आवे नरककूपमां नांखण काज.
चेत चेत चेतन आ समये नहींतर तारी जाशे लाज ॥ १४ ॥

ज्यांनी दुर्गन्धांशथकी पण नगरलोकनुं मृत्यु थाय,
सागरोपमनां आयुष्य मोटां छेद्यां पण ते नव छेदाय।
करवतथी पण कठिन स्पर्श जाणे भालानो मार भराय,
ए दुःख नरकतणां हे चेतन कहेने तुजथी केम खमाय ॥१५॥

---

१ समुद्र,

कोइ समर्थ लुहारपुत्रथी पक्षदिवस तकखूब धमाय,
लोढानो गोळो ते लइने शीतनरकमां जो मुकाय।
निमेषमात्रमां ते गोळो ते शैत्य थकी क्षय पामी जाय,
ए दुःख नरकतणां हे चेतन कहेने तुजथी केम खमाय ॥१३॥

ग्रीष्मतापथी आकुळ व्याकुळ हस्ती पुष्करिणीमां न्हाय,
जे शान्तिनो अनुभव एने शीतळ जळमां न्हातां थाय।
मध्य लोकनां उष्णक्षेत्रमां पण नारकीओ युं हरखाय,
ए दुःख० ॥ १७ ॥

स्वीयमांसनुं भोजनने उकळता बाम्ररसोनुं पान,
तीव्रशस्त्रथी छेदन भेदन ने वैतरणीमांहे स्नान।
देहतणां ज्यां खंड करीने तप्त तेळमां खूब तळाय,
ए दुःख० ॥ १८ ॥

करवतथी कापे देवोने वज्रप्रहारे चूर्ण कराय,
शाल्मली वृक्ष उपर आरोपे ने कुम्भीपाके पकवाय।
तप्त लोहनी पुतलीकेरुं आलिंगन ते केम कराय,
ए दुःख० ॥ १९ ॥

१ बाब-

ऊछाळे आकाशे नीचे नाखी छेदे नाकने कान,
शेके ऊनी रेतीमां ज्हेने नहीं परनां दुःखनुं ज्ञान।
आंतरडा खेंचीने रौरव दुःख दीये ते नैव कहाय,
ए दुःख० ॥ २० ॥

सर्वक्षेत्रनां सर्वधान्यथी नरकजीव नव एक धराय,
सर्वसमुद्रनुं जल पीवे पण तृषा तेहनो शान्त न थाय
ईर्ष्याथी बळतां ए जीवो एकबीजाने खावा धाय,
ए दुःख० ॥ २१ ॥

केवलज्ञानी जिनवरदेवे सर्वे लोकना भाव कहाय,
सर्व सत्य सद्दूहतो पण तुं शाने संसारे मूंझाय।
दीवो हाथ छतां पण अमृत शाने ऊंडे कूप पडाय,
ए दुःख० ॥ २२ ॥

सर्वचेतनो भवसायरमां जेनां भारे डुबी जाय,
कर्म नृपतिए एम विचारी सुंदर शीला एक घडाय।
स्त्री कामिनी सुंदरी महिला एवां एनां नाम पडाय,
सर्व दुःखनुं साधन एवी स्त्रीने चेतन शाने च्हाय॥ २३ ॥

स्नेहमनोहरवचन वधूनां हरिणगीतनी जेवां जाण,
शशीसम मुखते सुखकर नहिं पण पतंग दीपनुं जेवुं मान
नेत्र बाण ए बाणज कोमळ हैयुं जेनाथी वींधाय,
सर्व दुःखनुं० ॥ २४ ॥

हावभाव हस्तादिकनो ते कामपिशाचतणो आवेश,
आभरणो छे भारभूतने इन्द्रजाळ समोछे वेश ।
चाल विगेरे जोतां जीवो कैक दुःखने दरीए जाय,
सर्व दुखनुं साधन० ॥ २५ ॥

दूर रहेली अल्पमात्र पण दुर्गन्धि देखी दुहवाय,
मुख मरडेने नासिकाने ढांकी झटपट दूरे जाय ।
ते दुर्गन्धिथीज भरेलो शुं नव नारी देह जणाय ?
सर्व० ॥ २६ ॥

अस्थि मज्जा आंतरडा ने रुधिर मांसतणो भंडार,
चर्मस्नायुमलमूत्रतणी कोठीमां शो लागेछे सार ।
अशुचि ने अस्थिर पदार्थोना फासामां कोण फसाय,
सर्व दुःखनुं० ॥ २७ ॥

विषवल्ली पण भोंय न उगे सिंहण पण गुफा नही ठाम,
मोटो व्याधि पण वैद्योनां शास्त्रविषे नहीं एनुं नाम ।
मेह विनानी एह बिजळी कहो कोणथी जाणी जाय,
सर्व दुःखनुं० ॥ २८ ॥

दरमां नव रहेती पण नागण लोहमयी नहीं पण तरवार,
देखा हे दिनरात छतां पण राक्षसीनो ए तो अवतार ।
नहीं नवाही पण ए मदिरा जोवाथीय जनो मूझाय,
सर्व दुःखनुं साधन० ॥ २९ ॥

क्षणमां रागी क्षणमां द्वेषी क्षण क्षण जेनुं मन पलटाय ।
स्वीयपतिने छेडी सत्वर अन्य कने खंते जे जाय,
कामण टुंबण ने दुष्कर्मो कार्यो जेनां नित्य गणाय,
सर्व० ॥ ३० ॥

बीकण थइने मोटां मोटां साहस कार्यो करवा जाय,
पतिपुत्र के भाइब्हेन पण क्षणमां जेनाथीय हणाय ।
दिवसे कागथी बीवे ने निशीए नदीए तरवा जाय,
सर्व दुःखनुं० ॥ ३१ ॥

मृषावादनुं मन्दिर कंइ बोले ने करवाने व्हाय,
कपट पुत्तळीनां मन केरो भाव न कोइ थकीय जणाय ।
सूर्यकान्ता सुकुमालिका जेवां दृष्टान्तो बहु संभळाय,
सर्व दुःखनुं साधन० ॥ ३२ ॥

आ भवमां पण स्त्रीने योगे चेतन चिन्ता अधिकी थाय,
पुत्रादिकनां पालण-पोषणमाटे धंधा कैंक कराय ।
शान्ति ने सुखने वेची संताप शोक व्होरी लेवाय,
सर्व दुखनुं साधन० ॥ ३३ ॥

नेमिनाथजी राजीमती वर्जीने चाल्या श्रीगीरनार,
शालिभद्र जी–बत्रीश नारी छंडी लेतां संयमभार ।
मिथिलानृपथी एकज साथे एकहजारने आठ तजाय,
सर्व दुःखनुं० ॥ ३४ ॥

सुवर्णवेधकरसने योगे लोह कनकता पामे जेम,
ज्ञानी भाषित भावनाभावित चेतन निर्मळ थाये एम ।
मन्त्रप्रयोगे झेरीनागतणुं पण शुं नव झेर हणाय,
कोण विभाव रमणता एवी जे जिनवचने नष्ट न थाय.॥३५॥

आयु वायु तरग समुं ने संपत्ति क्षणमां क्षीण थाय,
इन्द्रियगोचर विषयो चञ्चल सन्ध्यारंग समान जणाय ।
मित्र वनिता स्वजनसमागम इन्द्रजालने स्वप्नसमान,
कइ वस्तु छे स्थिर आ जगमां जेने इच्छे जीव सुजाण॥३६॥

जे षट्खंडमहीनां जेता चौद रत्ननां स्वामी जेह,
ने जे सागरोपमनां आयुष्यधारी स्वर्गनिवासी तेह ।
क्रुर कृतान्तमुखे टळवळतां शरणविनानां दुःखी थाय,
तन धन वनिता स्वजनसुतादिक कोइ न एने शरणुं थाय ॥

लोभ दावानल लाग्यो छे ज्यां लाभजले जे शान्त न थाय,
मृग तृष्णासम भोगपिपासाथी जन्तुगण ज्यां अकळाय ।
एक चिन्ता ज्यां नाश न पामे त्यांतो बीजी ऊभी थाय,
एम संसारस्वरूप विचारी कोण न वैराग्ये रंगाय. ॥ ३८ ॥

ज्ञान-दर्शन-चारित्रस्वरूपी एकज आत्मा छे निःसंग,
बाह्यभाव छे सघळां एमां स्वात्मीयतानो नहीं छे रंग ।
जन्मजरा मृत्यु ने कर्मफळोनो भोगवनारो एक,
एम विचार करंता जाग्यो नेमिराजाने चित्त विवेक ॥ ३९ ॥

जेम नलिनीमां जल नित्ये भिन्न रहेछे आपस्वभाव,
तेम शरीरे चेतन रहेछे अन्यपणुं ए रीते भाव ।
भेद ज्ञान निश्चळ झळहळतुं सर्व भावथी ज्यारे थाय,
तजी ममता ग्रही समता चेतन तत्क्षण मुक्तिपुरीमां जाय॥४०॥

छिद्र शतान्वित घट मदिरानो मद्यबिन्दुओ झरतो होय,
गंगाजळथी धोवे तोपण शुद्ध करी शकशे शुं कोय ।
देह अशुचि छे छिद्रान्वित मलमूत्रादिकनो भंडार,
नावो धोवो चन्दन चरचो तोपण शुद्ध नहीं ज थनार॥४१॥

(शार्दूलवि०)

ज्यां आ जीव अनुभवी सुखदुःखो कर्मांशने निर्झरे,
त्यां तो आश्रवशत्रुओ क्षणक्षणे कर्मो घणाए भरे ।
मिथ्यात्वादिक चारमूख्य रिपुओ रोकी शकाये नहीं,
ने आ चेतन कर्मभार भरीओ जाये न मुक्तिमहीं ॥ ४२ ॥

सम्यक्त्वे मिथ्यात्वद्वार ने संयमथी अविरति रोकाय,
चित्ततणी स्थिरतानी साथे आर्तरौद्रध्यानो नव थाय।
क्रोध क्षमाथी मान मार्दवथी माया आर्जवथी झट जाय,
संतोष सेतु बांध्यो लोभसमुद्र कदी नव विकृत थाय.॥४३॥

गुप्तित्रयथी मन वचनने कायाना योगो रुंधाय,
एम आश्रवना द्वारो सघळां संवरभेदे बंधज थाय ।
संवरभावना इणविध भावी जो आचार विषेय मूकाय,
तो शुं सघळां संसृतिनां दुःखथी आ चेतन मुक्त न थाय॥४४॥

तप्तवह्निनां ताप थकी जेम स्वर्णमेल ते थाये दूर,
द्वादशविधतपथी आ आत्मा कर्मवृन्द करे चकचूर ।
अणिमादिकलब्धिओ एनुं आनुषङ्गिक कार्य गणाय,
दृढप्रहारी चारमहाहत्याकारी पण मोक्षे जाय ॥ ४५ ॥

सूर्य चन्द्र उगे ने, वरसे जलधर, जग जलमय नव थाय,
श्वापद जन संहार करे नहीं वह्निथी नव विश्व बळाय ।
श्रीजिनभाषित धर्मप्रभावे इष्टवस्तु क्षणमांय पमाय,
करुणाकर भगवन्त धर्मने कोण मूर्ख मनथी नव च्हाय॥४६॥

कटिपर स्थापित हस्त प्रसारितपाद पुरुषना जेवो जेह,
षड् द्रव्यात्मक लोक अनादि अनन्त स्थिति धरनारो तेह।
उत्पत्तिव्ययध्रौव्ययुक्त ते उर्ध्व अधोने मध्य गणाय,
लोकस्वरूपविचार करतां उत्तमजनने केवल थाय, ॥४७॥

प्रथम निगोद पछी स्थावरता त्रसता पञ्चेन्द्रियता होय,
मनुष्यपणुं पामीने धर्मश्रवणथी समकित पामे कोय ।
सुरमणि सुरघट सुरतरु महिमा एनी पासे अल्प गणाय,
बोधिरत्ननी दुर्लभता ते एकजीभथी केम कहाय. ॥ ४८ ॥

हितचिंतनथी सव सत्त्वनी साथे चेतन मैत्री जोड,
वैर विरोध खमावी दइने ईर्ष्या अन्धापाने छोड ।
मातपिताने बन्धु रूपे सर्व जीव संसारे होय,
विभाव रमणता विण आ जगमां सघळो शत्रु छे नहीं कोय

जिह्वा डाही थइने गुणीनां गुणनुं प्रेमे करजे गान,
अन्यकीर्तिने संभाळवाने सज्ज थजो हे बन्ने कान।
प्रौढ लक्ष्मी बीजानी निरखी नेत्रो तुम नव धरशो रोष,
प्रमोदभावना भावित थाशो तो मुजने तुमथी संतोष ॥५०॥

जन्म जरा मृत्युनां दुःखो अहर्निश सहेतुं विश्व जणाय,
तन धन वनिता व्याधिनी चिन्तामां सारो जन्म गमाय ।
श्रीवीतराग वचन प्रवहणनो आश्रय जो जनथीय कराय,
तो दुःखसागर पार जइने मुक्तिपुरीनां सौख्य पमाय ॥५१॥

कर्मतणे अनुसारे जीवे सारां नरसां कार्य कराय,
राग द्वेष स्तुति निन्दा करवी तेथी ते नव युक्त गणाय, ।
बळात्कारथी धर्मप्रेम वीतरागप्रभुथी पण शुं थाय,
उदासीनताअमृतरसनां पान थकी भवभ्रान्ति जाय, ॥५२॥

हरिगीत.

असार आ संसारमां नथी सौख्य के शान्ति जरी,
आधि उपाधि व्याधिओथी आ बधी दुनीया भरी ।
एम जाणतो पण जीव तुं आलस अरे रे. केम करे ?,
कल्याणकारी धर्म जिननो केम तुं नव आदरे ? ॥५३॥

धन पुत्र प्रभुता लाडी गाडी चित्तमां नित्य चिंतवे,
आजे मले काले मले एम ऊर्मिओ उरमां धरे ।
पण अंजलिना जळपरे जीव आवखुं तारुं घटे,
ते केम तुं जाणे नहीं डहापण भरी बुद्धि छते, ॥५४॥

जे काल करवुं होय शुभ ते आज कर उतावलो,
"श्रेयांसि बहु विघ्नानि" ए सिद्धान्त जाण खरेखरो,
नव सांजनी पण वाट जो कल्याणकारी कार्यमां
हे बन्धु पामरजीवनी जेम सुखदसमयो हारमां ।। ५५ ॥

जोडे रम्यां ज्हेनी अतिशय प्रीतथी जोडे जम्यां,
जोडे निशाळ विशे जतां परलोकमां ते पण गयां ।
सवारमां जोयेल ते पण सांज नव देखाय छे,
हे मित्र ? आ संसारनो केवो विचित्र स्वभाव छे ॥ ५६ ॥

आ जागवानो समय छे त्हेने विषे तुं क्युं सुवे,
आ नासवानां समयमां शाने वळी बसी रहे ।
तुज जीवन धनने लुंटवा त्रण तस्करो पूंठे पड्या ।
एक रोग बीजी जरा त्रीजो मृत्यु ए सौने नड्यां,

आ काळरूपी रेंटने शशी सूर्य वृषभो फेरवे,
दिनरातरूप घटमाळथी तुज जीवन धनने संहरे ।
पण परभवे पाथेय सरखां धर्मने नव आदरे,
हा हाथ घसतो जइश चेतन मधतणी माखी परे ॥ ५८ ॥

जे शरीरनुं सौंदर्य नीरखी चित्तमांहे तुं हसे,
त्हेनेज ज्यारे काळरूपी नाग झेरीलो डसे ।
ते समे कोइ कळा नथी के कोइ पण औषध नथी,
नथी मन्त्र तंत्र विज्ञान एवुं थाय रक्षण जेहथी. ॥ ५९ ॥

शेष नाम ए छे नाळ्युं ने पृथ्वी ए तो पुष्प छे,
छे पर्वतो ते केशरा सर्वे दिशाओ पत्र छे।
माणसरुपी मकरन्द छे एने अनादि काळथी,
आ काळभमरो चूसतो संतोषने धरतो नथी. ॥ ६० ॥

दिनरात छिद्र गवेषतो छाया तणे व्हाने फरे,
आ काळरुप पीशाच: पापी छळकरीने संहरे,
एना झपाटामां पडेलो झूरी झूरीने मरे,
हा हा करी नहीं धर्मसिद्धि एम पस्तावो करे ॥ ६१ ॥

चणीबोर मूळा मोघरीनी जातिमां पण तुं गयो,
विष्टातणो कीडो थयो थइ शेठ नोकर पण थयो।
एम विविध कर्मवशे करी संसार नाटक संचर्यो,
हा मित्र तुं परवशथकी दुःखी थयो दुःखी थयो ॥ ६२ ॥

माता पिताने पुत्र पुत्री बन्धुओ, भार्या तथा,
मित्रो सगां व्हालां सबन्धी शरीरनां छे सर्वथा।
स्मशानमां ए देहने बाळी रुवेछे स्वार्थने,
आ स्वार्थनां संसारमां शो स्नेह लाग्यो तने ॥ ६३ ॥

हे मुग्ध जीव ! विचार आ संसार तारुं कोण छे ?
सर्वे सगां तुजने तजी अथवा तजीने तुं जशे ।
वीतरागभाषित धर्म केवल ते समे साथे थशे,
दुर्गतिकेरा कूपथी तत्काल तेज बचावशे. ॥ ६४ ॥

अष्टकर्मरूपी बन्धने बंधाइ कारागारमां,
संसारमांहे तुं सडे छे मोहना साम्राज्यमां,
ए बन्धनोने आत्मबळथी वीर थइने तोडशे ।
तो मुक्तिनां सम्राज्यने तुं आत्मसाथे जोडशे ॥ ६५ ॥

जे लक्ष्मीमां ललचाइने तुं धर्मकरणी नव करे,
ने जे सगां व्हालांकृते तु श्वानवृत्ति आदरे ।
जे विषयसुखनी लाळचे ललना सदा चित्ते धरे,
ते सर्व क्षणानशी खरेखर पत्र जलबिन्दु परे ॥६६॥

हे वृद्ध ? तुज यौवनदशाने शक्ति सघळी क्यां गइ, ?
तुज अंगनी शोभा तणी हा हा दशा आ शी ? थइ ।
लाळा झरे तुज मुख थकीने मश्करी लोको करे,
ते जोइने पण वृद्ध तुं वैराग्यने केम नादरे ? ॥ ६७ ॥

धनकर्मरुपी बन्धनो बांधी अरे दस्युपरे,
चेतन तने आ मोहराजा भवनगरमां फेरवे ।
विडम्बना पामे घणी ने विविध दुःखोने सहे,
निःशरण आ संसारमां शो सार छे ते तुं कहे ? ॥ ६८ ॥

सर्वज्ञ करुणागार प्रभुए लाख चोराशी कह्यां,
आ जीवने उत्पन्न थवानां स्थान बहु दुःखे भर्यां ।
ए सर्व स्थानोमां अनन्ती वार चेतन आथड्यो,
कर धर्म मानव जन्महीरो आज तुज हाथे चढ्यो. ॥ ६९ ॥

बहु जातिओमां भ्रमण करतां सर्वसंबन्धो कर्या,
माता पिता बन्धुपणे तुज सर्व सत्त्वो सांपड्यां ।
पण कोइथी अद्यापि तुज रक्षण कदीए नव थयुं,
हे जीव ? तारु जीवन सवी एळे गयुं एळे गयुं ॥ ७० ॥

जेम अल्पजलमां माछली निःशरण थइने तरफडे,
तेम जीवन अन्ते जीव आ पीडायछे व्याधि वडे ।
मा' मा' करे कोइ करुण स्वरथी अश्रुनी धारा वहे,
देखे सगा व्हालां तथापि कोइ दुःख न संहरे. ॥ ७१ ॥

आ पुत्र मुज सुखहेतु छे आ स्त्री सदा सुखदायिनी,
मत जाणजे एम मन विषे ए बुद्धि छे दुखदायिनी ।
एम मानता कै नारकी ने कैक तिर्यंचो थयां,
नरजन्महीरो हाथथी हारीगयां हारीगयां. ॥ ७२ ॥

माता मरो स्त्री थायछे ने स्त्री मरी माता बने,
थाये पिता ते पुत्रने जे पुत्र तेज पिता पणे ।
एक जन्ममां पण जीव आ बहु रंगथी रंगाय छे,
कुबेरसेनपरे अरे पीडायछे पीडाय छे. ॥ ७३ ॥

चोराशी लाख योनि विषे नथी कोइ योनि विश्वमां,
नथी जाति के कोइ कुळ एवुं जीव न गयो जेहमां ।
वळी स्थान पण एवुं नथी आकाश के पातालमां,
ज्यां जन्ममरणो नव कर्यां बहुवार श्वासोश्वासमां ॥ ७४ ॥

जे विविध विषयो भोगव्यां बेहुवार ने जे जे वम्यां
परभावमां पकडाइने ते ते अरे पाछा ग्रह्यां ।
पण विषय सुखनी लालसा तारी हजीए नव मटी,
शुं सींचता घृतथी कदीए अग्निनी ज्वाला घटी ॥ ७५ ॥

छे स्त्री खरेखर शस्त्र ने आ बन्धुओ बन्धन खरे,
जे विषय सुखने विष समा दोलत वळी दोलत अरे ।
एम जाणीने हे मित्र ! मारा विरम आ संसारथी,
आ लाकडानां लाडवामां रसतणो छांटो नथी ॥ ७६ ॥

जे कुटुंबने माटे करेछे विविध कर्मो होंशथी,
पण कर्मने उदये कुटुंबी कोइ तुज साथी नथी ।
आव्यो अरे तुं एकलो जाइश पण तुं एकलो,
ने परभवे दुःखी सुखी वा थइश पण तुं एकलो. ॥ ७७ ॥

तुज शत्रु के तुज मित्र एवी कोइ पण व्यक्ति नथी,
त्हारा विना आ विश्वमां ए कोइ पण शक्ति नथी।
संसारमां संसक्त एवो तुंज त्हारो शत्रु छे,
स्वभावमां रमतो खरेखर तुंज त्हारो मित्र छे ॥ ७८ ॥

मिथ्यात्वविषधर विष चडे छे जे समे आ आत्मने,
श्रद्धांग थाय शिथिल ने थाये प्रमादी ते समे ।
निन्दे विशेषे धर्मिजनने नास्तिकोने संग्रहे,
खुल्लां करे मर्मो गुरुनां पापवृत्ति ने वहे ॥ ७९ ॥

जेमप्रबलपवने शान्तजलधि पण अतिशय खळभळे,
तोफानमां आवी तरंगी प्राण ने धन संहरे ।
तेम चित्त जलधि विषयवृत्ति वायुथी डोळाय छे,
सद्‌बुद्धि नौका बहु गुणोनी साथ तळीए जाय छे. ॥ ८० ॥

संध्यासमयमां वादळा सरखी समृद्धि जाणवी,
जीवन दशा पण पाणीना बुदबुद सम निर्धारवी ।
नदी वेगनी जेवी जुवानी केटला वरसो रहे,
विचारीने हे जीव ? तारुं श्रेय शेमां ते कहे ॥ ८१ ॥

गुलाबकेरुं पुष्प आ शुभगन्धथी म्हेकी रह्युं,
जनचित्तने खेंची रह्युं रूप रंगने, रसथी भर्युं ।
स्पर्शे सुवाळुं पण अरे क्षणवारमां पलटाय छे,
जो जीव नेत्रो खोलीजे चगदाय छे चगदाय छे,

मुक्तिनगरमां जो जवा इच्छा हृदयमां छे तने,
विश्रन्ति लेतो नव घडीए विषय विष वृक्ष तळे ।
छाया य एहनी सत्त्वनाशक भ्रान्तिकारक थाय छे,
पछी मुक्तिपथमां जीवथी पगलुं य नव मुकाय छे ॥ ८३ ॥

निर्जनवने निर्भय थइने विलसतो स्वेच्छा थकी,
खावां तरुनां किसलयोने पान झरणां जलथकी ।
ते हस्ती वननो पण प्रहारो अंकुशोना जे सहे,
स्पर्शनवशे थइ रांकडो बहु भारने माथे वहे ॥ ८४ ॥

अतिचपळ उंडा जलरूपी निर्भय गृहे वसतो हतो,
पुष्पोतणो रस चूसतो चालाक शीघ्रगति छतो ।
ते मच्छ पण हा ! हृदयभेदक रीतथी य हणायछे,
जिह्वा विना ए कष्टमां कहे कोण कारण थायछे ॥ ८५ ॥

झंकारना शब्देकरी दिग्देश जेह गजावतो,
स्वजातिसंगे रंगथी रमतो छतो सुख पामतो ।
ते मधुप बन्धन पुष्पनुं गजकर्णनी लातो सहे,
जो नासिकाने वश पडीने झूरी झूरीने मरे ॥ ८६ ॥

पतंग पंचरंगी रूपाळुं गगनपथमां गाजतुं,
आघातथी के स्पर्शथी क्षणवारमां उडी जतुं ।
थइ नयनने वश ते बिचारुं ज्योतमां झपलायछे,
एम जाणीने पण जीव चेतन नयनने वश थायछे ॥ ८७ ॥

(शार्दूल)

रहेवुं गाढनिकुंजमां विहरवुं निभिक थइने वने,
सहेवुं ना कदीए कटुवयणने ना देखवुं दुष्टने ।
जेहने तेह मृगो य श्रोत्र वशथइ खोवे अरे, प्राणने,
ने सर्पों य थइ सुशब्दरसिको केवा पडे बन्धने ॥ ८८ ॥

भयपामीने मृत्यु थकी तुं शीद धर संतायछे,
मौक्तिकप्रमुखनी भस्म शाने शक्तिमाटे खायछे ।
भयभीतने ए मृत्युराक्षस नव तजे पण जन्मने,
जे नव भजे त्हेने तने कर जन्मनाशक यत्नने ॥ ८९ ॥

मृत्युतणी साथे नथी मैत्री करी तें मानवी,
एहनां भयेथी रक्षनारीछे सुरंगो क्यां नवी ।
निश्चय नथी कीधो मरणनां समयनो ज्ञानी कने,
शाथी कहेछे आ स्थितिमां काल करीशुं धर्मने ॥ ९० ॥

जे दिवसने जे रात्रिओ तुज जीवनमांथी जायछे,
क्रोडो उपाये कोइथी कदीए न एह पमायछे ।
अपूर्व अवसर आ बधो ऐळे गुमावे शीदने,
निद्रा तजीने स्वस्थ कर तुज चित्तने तुज चित्तने ॥ ९२ ॥

तृणाग्रजलबिन्दु समुंछे जीवनने आ वैभवो,
समुद्र जलकल्लोल ज्युं देखाव दे छे नवनवो।
पत्नी प्रमुख प्रेम ते पण स्वप्ननां सम जाणवो,
समस्त आ संसार जाणो लाकडानो लाडवो ॥ ९२ ॥

(शार्दूल)

मोटुं मंदीर ने विनीततनयो लक्ष्मी न खूटे कदी,
ने कल्याण करी वधू विरहने मित्रो शके ना सही।
मानी विश्व सुरम्य एम पडतां संसारमां के जनो,
जाणीने क्षणनष्ट संग तजता कै संत ए सर्वनो ॥ ९३ ॥

साक्षात् श्री जिनदेवने निरखशुं क्यारे अहो नेत्रथी !
ने वाणी मनोहारिणी चित्त धरशुं क्याये कहो प्रेमथी।
श्रद्धा निश्चल धारशुं जिनमते श्रेणीकवत् के समे,
मे देवेन्द्र वखाणपात्र थइशुं क्यारे सुपुण्ये अमे ॥ ९५ ॥

क्यारे देव चलायमान करवा मिथ्यामति आवशे,
ने सम्यक्त्व सुरत्ननी अम विशे साची परीक्षा थशे।
क्यारे पौषधन ग्रही प्रणयथी सद्भावना भावशुं,
ने रोमाञ्चित थइ तपस्वीमुनिने क्यारे पडीलाभशुं ॥ ९६ ॥

सद्वैराग्यरसे रसिक थइने दीक्षेच्छु क्यारे थशुं,
ने दीक्षा ग्रहवा मुनीश्वर कने क्यारे सुभाग्ये जशुं;
सेवा श्रीगुरुदेवनी करी कदा सिद्धान्तने शीखशुं,
ने व्याख्यानवडे समस्तजनने क्यारे प्रतिबोधशुं. ॥ ९७ ॥

गामे के विजने सुरेन्द्रभवने ने झुंपडे क्ये समे,
स्त्रीमां ने शबमां समानमतिने क्यारे धरीशुं अमे;
सर्पे के मणिमाळमां कुसुमनी शय्या तथा धूळमां,
क्यारे तुल्य थशुं मफुल्लितमने शत्रु अने मित्रमां. ॥९८॥

योगाभ्यासरसायणे हृदयने रंगी असंगी बनी,
क्यारे अस्थिरता तजी शरीरने वाणी तथा चित्तनी;
आत्मानन्द अपूर्व अमृतरसे न्हाइ थशुं निर्मळां,
ने संसार समुद्रना वमळथी क्यारे थशुं वेगळां. ॥९९॥

क्यारे सिद्धगिरि पवित्रशिखरे जइ शान्तवृत्ति सजी,
सिद्धोनां गुणनो विचार करशुं मिथ्या विचारो तजी;
वासीचन्दनकल्प थइ परिसहो सर्वे सहीशुं मुदा,
आवी शान्त थशे अहो अमकने शत्रुसमूहो कदा ॥१००॥

श्रेणी क्षीणकषायनी ग्रही अने घाती हणीशुं कदा,
पामी केवळज्ञान सर्वजनने, देशुं कदा देशना;
धारी योगनिरोध कोण समये जाशुं अहो मोक्षमां,
एवी निर्मळ भावना प्रणयथी भावो सदा चित्तमां. ॥१०१॥

श्रीमन्नेमिसूरिशनी, कृपादृष्टिथी आज,
आ वैराग्यशतक रच्युं, स्वपरश्रेयने काज. ॥१॥

राजनगरमां कीकाभट्टनीपोळमां बिराजमान श्रीडोसलापार्श्वनाथप्रभुनुं स्तवन.

॥ अन्तरजामी सुण० ए राग ॥

पुरिसादाणी केवलज्ञानी, सर्व जगतना स्वामी,
सेवक शरणे आव्यो जीनजी, शीवपदकेरो कामी;

जगदुद्धारक पासजीणंद! मुजने भवसायरथी तारो,
तारो तारोने महाराज! मुजने भवसायरथी तारो. १

आधि व्याधि उपाधि भरीयो, भवसायर तमे तरीयो,
ते समये हे वामानन्दन,सेवक केम विसरीओ;
पुरिसादाणी. २

तापसनी धूणीथी आपे, बळतो नाग कढाव्यो,
सेवक मुख नवकार सुणावी,ने धरणेन्द्र बनाव्यो.पुरिसा०३

अषाढा श्रावक आदि तर्या जेम, तुज प्रतिमाने सेवी,
एवी रीते अमे पण तरशुं, दृढ इच्छा छे एवी. पुरिसा०४

"राजनगरमंडन" भयखण्डन,डोसला पार्श्व जिणंदा,
नेमि[illegible]नो अमृत विनवे, आपो नित्य आनंदा.पुरिसा०५

कीकाभट्टनी पोळमां बिराजमान श्रीविमलनाथप्रभुनुं स्तवन

॥अन्तरजामी सुण० ए राग

अजर अमर अकलंक अनश्वर, सर्वशविनधर स्वामी,
किंकर करुणस्वरे विनवे हे, सुणजो अंतरजामी.

विमल जिनेश्वर विमलस्वरूप ! मुजने भवसायरथी तारो,
तारो तारो ने जिनराज, मुजने भवसायरथी तारो. १

कृतवर्मानृपकुलनभभानु, श्यामादेवी जस माया,
कनक वर्णनी साठ धनुष्यनी, निर्मळ प्रभुनी काया-विमल० २

गर्भथकी पण जेम जननीने निर्मळ बुद्धि दीधी,
निर्मळ बुद्धि लेवा तुमथी आश असे तो कीधी. विमल० ३

शुक्लध्यान अग्नि ज्वालाथी, कर्ममलो क्षीण कीधां
विमळ बनीने एकसमयमां, अनुपम शीवसुख लीधां. विमल० ४

राजनगरमंडन हे जिनजी, विमल करो अमने,
नेमिसूरिनो अमृत विनवे, शुं कहीये बहु तमने. विमल० ५

ओँ नमः पार्श्वनाथाय

ॐ नमः श्रीगुरुनेमिसूरये

(द्रष्टान्तावली)

सुरनरसेवित जिनपति, श्री सेरीसापास ।
प्रगट प्रभावी प्रणमतां, पूरे मननी आश ॥ १ ॥

आ काळे आ भरतमां, युग प्रधान समान ।
गुरुवर नेमिसूरीशनुं, धरीने हृदये ध्यान ॥ २ ॥

रचशुं दृष्टान्तावली, सज्जन मुख शणगार ।
जे भणतां सुख उपजे, सूक्तरत्नावलीसार ॥ ३ ॥

चन्द्र विनानी ज्युं निशा, सुस्वर विण ज्युं गान ।
वाणी विण दृष्टान्त युं, नव पामे सन्मान ॥ ४ ॥

मोटा हित माटे बने, थोडो पण गुणी संग ।
अल्प लवणथी अन्न ज्युं, स्वादु बनेछे चंग ॥ ५ ॥

पर संपत्ति देखीने, पवित्र जन हरखाय ।
नभ निर्मळता निरखतां, स्वच्छ शरदजल थाय ॥६॥

दुर्भाग्ये दुःखकर बने, सज्जन संग सुजात ।
पेखो कपूर संगथी, श्रीफळ जळ विष थात॥ ७ ॥

पापी पाप तजे नहीं, ककडा करीए तोय ।
शिरहीन राहु पण ग्रहे, पूर्णचन्द्रने जोय ॥ ८ ॥

सज्जन छंडी मूर्खनर, दुर्जन पासे जाय ।
मूकी मधुरी द्राखने, काग निंबोळी खाय ॥ ९ ॥

अति परिचय जे करे, मान रहित ते थाय ।
देखो मलये बावना-चन्दन इन्धण थाय ॥ १० ॥

उत्तमने उत्तम मळे, त्यां धर्मोन्नति थाय ।
गंगा जमुना संगथी, तीर्थ प्रयाग मनाय ॥ ११ ॥

लघु पण पीडे पुष्टने पामी स्थान विशेष ।
मच्छर हाथी कानमां, पेसी पडावे चीस ॥ १२ ॥

सार गये जन श्रेष्ठने, बोले बूरा बोल ।
तेल गये तल देखीये, लोक कहेछे खोळ ॥ १३ ॥

प्राणान्ते पण नव तजे, पोतानां जे होय
शुष्कसरे सूकायछे, पंकज पंक्ति जोय ॥ १४ ॥

दुर्मुख क्षणमां क्षीण करे, जन्मतणो पण प्रेम ।
तन्दुल तुष मित्रता, मूशळ विनाशे जेम ॥ १५ ॥

स्थळभेदे तेजस्विता,हित अहित निदान ।
दर्पणमां मुख देखवा, खड्गमां खोवा प्राण ॥१६॥

मलीनमनुज पण सन्तने, संगे शोभे मित्त ।
आंजण आज्युं आंखमां, दीपे एहीज रीत ॥१७॥

सार विनाना दिवस ते,सुकृत विण जे जाय ।
अंक विनाना बिंदुओ, संख्यामां न गणाय ॥१८॥

निर्बळतामां मित्रपण, दुःखनुं होय निदान ।
दीप सहायक वायु पण,दीप विनाशक जाण॥१९॥

गुण विना पण विश्वमां, भयथी कैंक मनाय ।
नागपूजना सौ करे, हंस गरूड तजाय ॥ २० ॥

ज्युं मृग हणवा पारधी ,सुस्वर गाय सदाय ।
दुःख देवायुं दुष्टथी मीठां वेण वदाय ॥ २१ ॥

व्हेंचण नीरने क्षीरनी, कैंक मच्छथी थाय ।
पण प्रसिद्धि हंसनी, जश पुण्येज गवाय ॥ २२ ॥

दुर्बलने दुःख दे सवि,सबळ कने नव जाय ।
वाघ सिंह वरु छंडीने, देखो छाग हणाय ॥२३॥

भिन्न दृष्टिए एक पण, भिन्नभिन्न जणाय ।
योगी कामी कुनरे,शव स्त्री मांस मनाय ॥ २४ ॥

आश्रय पामी दुर्जनो, आश्रयनाशक थाय ।
देखो कीडा काष्ठनां, काष्ट ज कोरी खाय॥२५॥

जे कारज न्हानां करे, ते नव म्होटे थाय ।
ज्यां कीटीका संचरे, त्यां शुं हाथी जाय ॥ २६ ॥

मुखमां लाडु मुकतां, वशमां को न कराय ।
मुखलेपे मीठो ध्वनि, मृदंगथी पण थाय ॥ २७ ॥

शोक भराये चित्तमां, रोवुं हितकर थाय ।
ज्यु छलकातां सरतणां, खुल्लां द्वार कराय ॥२८॥

क्रोडो यत्न करो भले, जाति स्वभाव नजाय ।
सींचो छो'ने दूधथी,नींब न मधुरो थाय ॥ २९ ॥

सज्जन दूर गये छते, दुर्जन बहु देखाय ।
सूय चन्द्रनां अस्तमां, खजुवो ज्युं मलकाय॥३०॥

ज्युं नदीओ विण विनवी, उदधि आधीन थाय ।
युं योग्ये संपत्तिओ, विण यत्ने पण जाय ॥३१॥

घर देखाड्युं लुब्धने, दुःखनुं कारण थाय ।
विश्वामित्र वशिष्ठनो, धेनु लेवा धाय ॥ ३२ ॥

वखते विमला वारता, होये बाल समीप ।
सूर्य प्रकाशी नवशके, तेह प्रकाशे दीप ॥ ३३ ॥

प्राय असार पदार्थनं, अति आडंबर होय ।
कांसानो रणकार जे, ते शुं कनके जोय ॥ ३४ ॥

पर संपत्ति देखीने, दाजे दुर्जन दील ।
टाणे तरुवर सौ फळे, शुं नसूकाय करीर ॥३५॥

स्वयं सही दुःख अन्यने, शान्ति आपे सन्त ।
ताप सहीपण पान्थने, तरुवर शान्त करंत ॥३६॥

गुरु कर्मोने धर्मनी, करणी नीरस जणाय ।
खाखरानी खीसकोल्डीओ, आंबाने नव चढाय ॥३७॥

स्वीय महत्वने साचवे, पण्डित म्होटे यत्न ।
श्रीफळ जलने संग्रहे, त्रण वडे ज्युं रत्न ॥ ३८ ॥

प्रथम प्रवृत्ति पुरुषनी, प्रसिद्ध कारण थाय ।
प्रथम तेजथी लोकमां, उज्वल पक्ष मनाय ॥ ३९ ॥

सन्त स्वभाव तजे नहीं, छोने दइए छेह ।
जेम जेम घसीए कपुरने, तेम तेम सुगन्धि देह ॥४०॥

मान हानिमा वीरने ,योग्य विदेश प्रयाण ।
द्वीपान्तरमां संचरे, तेज रहित जेम भाण ॥४१॥

१शालीओ भोगवे ,करे एकठुं कोय ।
मधपाखी मध मेळवे, खाय अनेरा कोय ॥ ४२ ॥

। वस्तु तुच्छ पण ,वल्लभ अतिशय थात ।
भोजन अन्ने तृणसळो, एहिज अहीं दृष्टान्त ॥४३॥

ी यत्न करो भले , दुर्जन नव पलटाय ।
सोमण साबुए धोवतां, कागसफेद न थाय ॥४४॥

स्विने तुच्छ नर ,अनर्थ कारण होय ।
आसु पडावे आंखथी,तुच्छ तणखलुं जोय ॥४५॥

ग मुखनां मानवी, कादर्या कदाय न जाय ।
काप्यां काळां केश ते,फरीफरी जलदी थाय॥४६॥

वसरे गुणग्राहिता, दुःखनुं कारण थाय ।
गीन रसीक थइ मृग जुवो, मोत समीपे जाय॥४७॥

व दीये सुख आपवा, पवित्र नर जे होय ।
कपुर आपे शीतलता, आंसु पडावे तोय ॥ ४८ ॥

ले पगले पामीए, पापी धरमी लोक ।
घर घर काग निहाळीए, कोकिल पक्षी स्तोक ॥४९॥

तन वचनो अवसरे, सज्जन हितकर थाय ।
प्रयाण समये वाम खर, भूंकयो भलो मनाय ॥५०॥

लघु पण जेह कलानिधि, तेह लहे बहुमान ।
बीज तणां शशीने नमे, जनता ए ऐंधाण॥ ५१ ॥

स्थानभ्रष्ट पण शिष्टनर, पामे अधिकुं मान ।
राजाने माथे चडे ,मणि मूकीने खाण ॥ ५२ ॥

पंडितनी साथे रह्या ,मूर्खो पण पूजाय ।
कोयल टोळे कागडां, कोयल एम मनाय ॥५३॥

प्राये पापी पापमां ,होय प्रेम करनार ।
लींबडे वायसनी रति ,छंडिने सहकार ॥ ५४ ॥

स्वार्थ साधवा लोकमां ,नीच जनोय मनाय ।
रक्षण करवा धान्यनुं, भस्म यथा जळवाय ॥५५॥

सज्जन संकटमां पडये ,दुर्जन बहु हरखाय ।
मींचाये नरनेत्र जब ,तब घुवड विकसाय ॥५६॥

सन्त स्वभाव तजे नहीं, छोने दइए छेह ।
फरी फरी जल उकाळीए ,तोपण नीर्मळ देह ॥५७॥

निर्धन नरने नवभजे, स्वार्थी नर जे होय ।
पुष्प पूर्ण पलासने,भ्रमर न सेवे कोय ॥ ५८ ॥

सन्त संगथी कठिण पण, हैयु कोमळ थाय ।
शशी संगे जो जळथकी चन्द्रकान्त भींजाय ॥५९॥

उन्नतना आश्रय विना उन्नत कम थवाय ।
वृक्षाश्रय विणवेलडी शुं आकाशे जाय ॥ ६० ॥

समकितविण करणी सवी, भाग्भूत गणाय ।
पाया विनाना महेलमां, कहो कोण रहेवा जाय !६१

ज्ञान क्रिया बन्ने मळे, कार्यसिद्धि नव थाय ।
अंध पंगु संयोगथी, नगरी जेम पमाय ॥ ६२ ॥

वासण पण चळके नहि, विण घसारे मित्त ।
माणसनुं कहेवुं किश्युं एह विचारो चित्त ॥६३॥

सूरि प्रतिष्ठित विश्वमां, पत्थर पण पूजाय ।
गुरु श्री नेमि सूरीशथी, अज्ञन अमृत थाय ॥६४॥

॥ इति स्तवनादि संग्रहः संपूर्णः ॥